युगानुकूल

जून 2025 मूल्य 25 रुपये

नवरचना

विकास के अनुकरणीय मॉडल आपके द्वार

स्वावलम्बन के पथ को आलोकित करता

दीनदयाल शोध संस्थान

22-24 मई 2025 – मेघालय

"एकात्म मानवदर्शन" पुस्तक, दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित किया गया था, मा. अरुण कुमार जी, मा. सह सरकार्यवाह, RSS द्वारा 31 मई 2025 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानवदर्शन व्याख्यानों की 60वीं वर्षगांठ पर आयोजित राष्ट्रीय स्मरणोत्सव सेमिनार में जारी किया गया। यह दो दिवसीय सेमिनार डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी अनुसंधान फाउंडेशन द्वारा NDMC कन्वेंशन सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। दीनदयाल अनुसंधान संस्थान के महासचिव श्री अतुल जी जैन ने "एकात्म मानवदर्शन: भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित राजनीतिक परंपरा" पर एक सत्र की अध्यक्षता की। मुख्य वक्ता मा. श्री भूपेंद्र यादव जी, माननीय केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री थे।

दीनदयाल शोध संस्थान

संस्थापक
नानाजी देशमुख

प्रबन्ध सम्पादक
अमिताभ वशिष्ठ

सम्पादक
राजेश दुबे

आवरण सज्जा एवं लेआउट
लक्ष्मी नारायण शुक्ला
अंशुमान सिंह
सतीश मालवीय

विशेष सहयोग
आशीष सक्सेना

प्रकाशक
अभय महाजन
दीनदयाल शोध संस्थान के लिये
7-ई, स्वामी रामतीर्थ नगर, रानी झांसी मार्ग, झण्डेवाला एक्स., नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित
दूरभाष : 23526735
ईमेल : dridelhi@dri.org.in
info@dri.org.in

मुद्रक :
प्रितिका प्रिंटर्स
ए-21/27, नारायण इण्ड. एरिया
दिल्ली-110028

पृष्ठ सं. 5 :
12वां नानाजी स्मृति व्याख्यान "आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस के सामाजिक प्रभाव" विषय पर संगोष्ठी

पृ.सं. 8 – तवांग में सतत कृषि-उद्यमिता के लिए एफपीओएस को मजबूत करने क्षेत्रीय कार्यशाला आयोजित एफपीओ के लिए संस्थागत ढांचे को मजबूत करने और उनकी दीर्घकालिक स्थिरता के लिए हुआ विमर्श

पृष्ठ सं. 11 —विक्रमोत्सव के अंतर्गत राजधानी दिल्ली में हुआ 'सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य' का महामंचन

पृ.सं. 16 – पंडित दीनदयाल उपाध्याय हिरक महोत्सवः एकात्म मानवदर्शन के 60 वर्षों का उत्सव

माँ मंदाकिनी नदी का भूगर्भीय एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने जुटे भूजल वैज्ञानिक	21
मंदाकिनी की प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखने सेवाभावी कार्यकर्ताओं की टीम सुबह 6:30 बजे से ...	24
माँ मंदाकिनी पर संगोष्ठी में निर्मल-अविरल प्रवाह के लिए प्रबुद्धजनों ने दिये सुझाव	25
चित्रकूट के रामघाट एवं राघव प्रयाग घाट में सामूहिक स्वच्छता कार्यक्रम में शामिल हुए ...	27
निर्मल-अविरल मां मंदाकिनी के लिए जन-जागरुकता अभियान का तीसरा दिन	30
कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां एवं गनीवां तथा जन शिक्षण संस्थान में मनाया गया महिला दिवस कार्यक्रम	33
राम नवमी पर चित्रकूट गौरव दिवस के उपलक्ष्य में आस्था के दीपों से जगमगा उठी धर्म नगरी	39
दीनदयाल शोध संस्थान एवं नेशनल मेडिको आर्गेनाइजेशन के द्वारा 150 ग्रामीण केन्द्रों में एक साथ चित्रकूट धाम स्वास्थ्य सेवा यात्रा 2.0 का आयोजन	41
राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा ने व्यक्तित्व विकास शिविर का किया अवलोकन	43
आरोग्यधाम में कटे-फटें होंठ, तालू एवं बर्न केसों की हुई निःशुल्क प्लास्टिक सर्जरी	45
बच्चों ने व्यक्तित्व विकास शिविर में किया विविध कलाओं का प्रदर्शन	47
राष्ट्रीय तकनीकी दिवस पर केवीके में वर्षा जल संचयन पर कार्यशाला, 94 जलदूत एवं कृषकों की रही सहभागिता	50
राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन (NICRA): ग्रामोदय से राष्ट्रोदय की मजबूत कड़ी	52
डिजिटल विपणन हब : ग्रामीण महिला किसानों के उत्पादों को नया बाज़ार	56
पी. एम. विश्वकर्मा योजना उत्कृष्ट कार्य के लिए जन शिक्षण संस्थान बीड पुरस्कार से सम्मानित	57
केवीके द्वारा वैज्ञानिक कृषक परिचर्चा का आयोजन	61
विकसित कृषि संकल्प अभियान में कमिश्नर, कलेक्टर सहित कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों से किया संवाद	64
टिकाऊ कृषि विकास हेतु समेकित तकनीकी एवं ग्रामीण कृषक क्रेता-विक्रेता सम्मेलन	66
टिकाऊ कृषि विकास एवं कृषक उत्पादों के मूल्य संवर्धन पर आधारित राष्ट्रीय कार्यशाला में आमदनी का जरिया बदलने हेतु समेकित कृषि तकनीकी पर दिया गया जोर	68
चित्रकूट के घाट पर भई योगिन की भीर,सब संस्थानों के संयोग से निरोगी रहे शरीर	71

माँ मंदाकिनी को हरा-भरा और सदानीरा बनाने डीआरआई की पहल

भारत का प्राचीन इतिहास जब भी पढ़ा जाता है तो नदियों का जिक्र जरूर होता है, क्योंकि प्राचीन काल में भी कुछ नदियां जीवनदायक का काम करती थी और आज भी करती हैं। गंगा, यमुना, कावेरी, गोदावरी जैसी नदियों का पानी आज भी कई राज्यों और शहरों के लिए काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। इसलिए इन नदियों के संरक्षण पर भी खासा ध्यान दिया जाता है। वैसे तो मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश की धरती से दर्जनभर से अधिक नदियां निकलती हैं, लेकिन मंदाकिनी नदी एक ऐसी नदी है जो सामरिक महत्व के साथ-साथ पौराणिक कहानियों के लिए भी प्रसिद्ध है।

प्रभु श्रीराम की तपोभूमि चित्रकूट से होकर बहने वाली माँ मंदाकिनीनदी एक पौराणिक नदी है जिसका उद्गम स्थल सतीअनसूया आश्रम चित्रकूट है। माँ मंदाकिनीनदी का निर्मल प्रवाह चित्रकूट (म.प्र.) से होकर जनपद चित्रकूट (उ.प्र.) के सरधुवा ग्राम के पास यमुना नदी में मिलता है। यह नदी तीर्थयात्रियों के लिए आस्था का केंद्र होने के साथ-साथ यह चित्रकूट की जीवनरेखा भी है। वर्तमान में माँ मंदाकिनीनदी अत्यधिक प्रदूषित होने के साथ-साथ इसकी अविरल-निर्मल प्रवाह की धारा भी मंद हो रही है। प्रतिवर्ष करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु चित्रकूट आते हैं, उनके एवं स्थानीय लोगों द्वारा उपयोग किए गए प्लास्टिक, थर्मोकोल, साबुन-शैंपू, पूजन सामग्री आदि माँ मंदाकिनीकी अविरल-निर्मल धारा को प्रदूषित कर रहे हैं।

यह नदी लगभग 50 किलोमीटर की यात्रा तय करती है और यमुना जी में मिलती है, यह नदी लाखों किसानों के सिंचाई के लिए जल प्रदान करती है, तो वहीं करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है। साथ ही धार्मिक सांस्कृतिक पर्यटको को आकर्षित करती है। मंदाकिनी नदी किनारे बड़े-बड़े पर्यटन के केंद्रः रामघाट, जानकीकुंड, स्फटिक शिला, सती अनुसुइया आश्रम, टाठी घाट आदि स्थित हैं।

माँ मंदाकिनीकी अविरल-निर्मल धारा बनाए रखने एवं प्रदूषण मुक्त करने हेतु दीनदयाल शोध संस्थान पिछले कई वर्षों से जनजागरण का का कार्य कर रहा है। इस वर्ष भी माँ मंदाकिनीके रामघाट (उ.प्र.) एवं राघव प्रयाग घाट (म.प्र.) में व्यापक स्तर पर स्वच्छता कार्यक्रम चलाया गया। जिसमें पूज्य साधु-संत व जन प्रतिनिधियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में गणमान्य जनों, पर्यावरणविदों, नदी एवं जल के क्षेत्र में कार्यरत विशेषज्ञों, दोनों जिलों (उ.प्र.-म.प्र.) के प्रशासनिक अधिकारियों के साथ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने श्रम-साधना की।

दीनदयाल शोध संस्थान ने नदी के प्रवाह को अविरल एवं निर्मल रखने हेतु आये विभिन्न सुझावों को समाहित करते हुए तय किया कि जनजागरुकता एवं स्वच्छता का कार्य व्यापक सहभागिता के साथ साल-भर अनवरत चलाया जायेगा। साथ ही माँ मंदाकिनीनदी के पूरे अपवाह क्षेत्र का जलवैज्ञानिक, भूगर्भीय एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में व्यापकअध्ययनकरने के लिए विशेषज्ञों का एकअध्ययनदल बनाया गया, जो नदी क्षेत्र के व्यापक सर्वेक्षण के साथ आगे के लिए एक कार्ययोजना तय करने के लिएमंदाकिनी अध्ययन यात्राका आयोजन भी हुआ।

आईआईटी रुड़की की टीम के सहयोग से विद्युत प्रतिरोधक टोमोग्राफी (ERT) जैसी उन्नत तकनीकी का प्रयोग करके भूजल क्षमता का आंकलन करते हुए मां मंदाकिनी व पयस्वनी के उदगम स्थल ब्रह्मकुण्ड से मशीनों द्वारा सर्वेक्षण के साथ पर्यावरण के अनुकूल सभी भौगोलिक परिस्थितियों, भूगर्भीय संरचनाओं एवं मानकों काअध्ययनकर 30 प्रतिशत तक जल की क्षमता में बृद्धि करने का प्रयास किया जा रहा है।

जनभागीदारीसे अविरलएवं निर्मलमाँ मन्दाकिनी के लिए शुरू किये गए अभियान का असर अब धीरे धीरे दिखाई देने लगा है। दोनों राज्यों की सरकार ने भी मिलकर कार्य करने की बात कही है, सरकार ने भी अब आश्वस्त किया है कि मां मंदाकिनीमें जल की कमी नहीं रहेगी, वन क्षेत्र में वन विभाग को एजेंसी बनाकर आवश्यक कार्य संपादित कराये जा रहे हैं। चित्रकूट की इस जीवनरेखा को सामूहिक प्रयत्न से पुनर्जीवन प्रदान करते हुए जिन स्थानों पर नदी सूख रही है, कई जगह जल श्रोत बंद हो गए हैं उन्हें कैसे खोला जाए इस पर काम शुरू हुआ है।

– अमिताभ वशिष्ठ

12वां नानाजी स्मृति व्याख्यान

“आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस के सामाजिक प्रभाव” विषय पर संगोष्ठी

प्रख्यात वैज्ञानिक एवं नीति आयोग के सदस्य डॉ. विजय कुमार सारस्वत और आरआईएस के माननीय अध्यक्ष, राजदूत संजय कुमार वर्मा ने विषय पर अपने विचार साझा किए।

नई दिल्ली/ दीनदयाल शोध संस्थान ने विकासशील देशों के लिए अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली (आरआईएस) और मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीओएसटी) के सहयोग से 5 अप्रैल 2025 को इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में ‘12वें नानाजी स्मृति व्याख्यान’ के अन्तर्गत “आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस के सामाजिक प्रभाव” विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी में सारस्वत वक्तव्य देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति एवं UN Commission on Faith and AI के आयुक्त डा. चिन्मय पांड्या जी ने दिया और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मुख्य अतिथि थे और केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद ने मुख्य भाषण दिया। प्रख्यात वैज्ञानिक एवं नीति आयोग के सदस्य डॉ. विजय कुमार

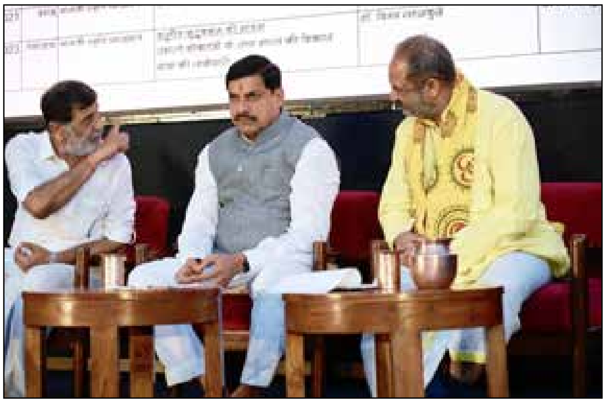

सारस्वत और आरआईएस के माननीय अध्यक्ष, राजदूत संजय कुमार वर्मा ने विषय पर अपने विचार साझा किए। आरआईएस के महानिदेशक प्रो. सचिन चतुर्वेदी और दीनदयाल शोध संस्थान के महासचिव श्री अतुल जी जैन ने दिन भर चलने वाले विचार-विमर्श का आधार तैयार किया। शिक्षा जगत के प्रख्यात विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, समाज

विज्ञानियों, वकीलों और उद्योग जगत के विशेषज्ञों ने आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार साझा किए। प्रो. सचिन चतुर्वेदी ने दिन भर चली चर्चा के परिणाम प्रस्तुत किए। डीआरआई के महासचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपने उद्बोधन में कहा कि महान विचारक भारत रत्न नानाजी देशमुख जी का संपूर्ण जीवन समाज के अंतिम व्यक्ति को सशक्त बनाने, आत्मनिर्भर ग्राम की परिकल्पना और सामाजिक समरसता की स्थापना के लिए समर्पित रहा। आज जब डिजिटल युग में AI हमारे सामने एक नई क्रांति बनकर उभर रहा है, तो हम इसे केवल तकनीकी नवाचार नहीं, बल्कि नानाजी के सपनों के समाज के निर्माण का माध्यम बना रहे हैं, जिससे 'सशक्त समाज, समर्थ भारत' का निर्माण हो। श्रद्धेय नानाजी जी को शत्-शत् श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इस समाजोन्मुखी आयोजन के लिए दीनदयाल शोध संस्थान का अभिनंदन करता हूँ।

तवांग में सतत कृषि-उद्यमिता के लिए एफपीओएस को मजबूत करने क्षेत्रीय कार्यशाला आयोजित

एफपीओ के लिए संस्थागत ढांचे को मजबूत करने और उनकी दीर्घकालिक स्थिरता के लिए हुआ विमर्श

तवांग (अरुणाचल प्रदेश): पूर्वोत्तर भारत के जीवंत गांवों में कुशल और टिकाऊ कृषि उद्यमिता के लिए किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) को मजबूत बनाने पर दो दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला और हितधारकों की बैठक का उद्घाटन तवांग के कला वांगपो कन्वेंशन सेंटर में किया गया। यह कार्यक्रम केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (सीएयू), इम्फाल और आईसीएआर-अटारी, जोन VI द्वारा आईसीएआर-आईआईएमआर, हैदराबाद के सहयोग से संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

कार्यशाला में सीमावर्ती क्षेत्रों में ग्रामीण उद्यमिता और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए एफपीओ और एफपीसी को मज़बूत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण और वैकल्पिक आय के लिए लघु उद्यम बनाने, सामूहिक विपणन और बेहतर ऋण उपलब्धता के साथ-साथ कृषक समुदायों को सशक्त बनाने और पलायन पर अंकुश लगाने पर चर्चा हुई। जिसमें भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय सचिव, श्री दिनेश कुलकर्णी ने अरुणाचल के किसानों के उत्साह की सराहना की और पलायन पर अंकुश लगाने तथा ग्रामीण युवाओं को सशक्त बनाने में एफपीओ की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर दिया।

उन्होंने किसानों से नाबार्ड और अन्य संस्थानों की सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ उठाने का आग्रह किया। इम्फाल स्थित केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अनुपम

मिश्रा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में औषधीय और सुगंधित पौधों सहित उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती में अरुणाचल प्रदेश के प्राकृतिक लाभ पर ज़ोर दिया। उन्होंने हितधारकों से निर्यात बाज़ारों की खोज करने का आग्रह किया और क्षेत्र में एफपीओ और एफपीसी के प्रसंस्करण और मूल्य श्रृंखला प्रबंधन में केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय से निरंतर तकनीकी सहायता का आश्वासन दिया।

विशिष्ट अतिथि, डॉ. राजबीर सिंह, उपमहानिदेशक (कृषि विस्तार), आईसीएआर, नई दिल्ली ने एफपीओएस को बढ़ावा देने और समर्थन देने में केवीके की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन के लिए अरुणाचल के एफपीओ की सफलता की कहानियों का दस्तावेजीकरण करने की आवश्यकता पर बल दिया और स्थायी व्यावसायिक वृद्धि के लिए क्षमता विकास के महत्व पर बल दिया।

विशिष्ट अतिथि श्री उल्लास कुलकर्णी, क्षेत्र प्रचारक, पूर्वोत्तर क्षेत्र और राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, आरएसएस ने एफपीओ में महिलाओं की सराहनीय भागीदारी की सराहना की और सीमावर्ती जिलों के दूरदराज के किसानों से आय बढ़ाने और युवाओं के पलायन को रोकने के लिए आधुनिक तकनीकों को अपनाने का आग्रह किया।

श्री अभय महाजन, संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान नई दिल्ली ने संस्थान के बारे में विस्तार से बताया। कार्यशाला के लक्ष्यों के अनुरूप दृष्टिकोण और उन्होंने लक्षित प्रशिक्षण और उत्पादन के माध्यम से आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए एफपीओएस/एफपीसी के लिए कार्यशील मॉडल विकसित करने का उल्लेख किया।

डॉ. जी. कादिरवेल, निदेशक आईसीएआर अटारी, जोन VI एवं डॉ. वी.के. सिंह ने गर्मजोशी से भरे स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की और अरुणाचल प्रदेश के तवांग क्षेत्र में विभिन्न फसलों के अवसरों और बाधाओं पर प्रकाश डाला। साथ ही, उन्होंने उच्च ऊंचाई वाले कृषि और जीवंत गांव कार्यक्रम के तहत की गई पहलों के साथ-साथ एफपीओ के लिए संस्थागत ढांचे को मजबूत करने और उनकी दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने की रणनीतियों के बारे में संक्षेप में

बताया।

कार्यशाला में तकनीकी सत्र शामिल थे जहाँ विशेषज्ञों ने वाइब्रेंट विलेज में एफपीओ के माध्यम से उद्यमिता को बढ़ावा देने की स्थिति और रणनीतियों के साथ-साथ प्रबंधन के मुद्दों, समाधानों और आपूर्ति श्रृंखला विकास पर चर्चा की। इसमें एक इंटरएक्टिव समीक्षा मुद्दे, अरुणाचल प्रदेश के सीबीबीओ और एफपीओ के साथ बैठक, किसानों को महत्वपूर्ण इनपुट वितरण भी शामिल था, और जमीनी अंतर्दृष्टि के लिए वाइब्रेंट विलेज के क्षेत्र के दौरे के साथ समापन हुआ।

कार्यशाला में अन्य लोगों के अलावा डॉ. वी. के. मिश्रा निदेशक, आईसीएआर-आरसी एनईएच क्षेत्र, श्री वसंत पंडित कोषाध्यक्ष, दीनदयाल शोध संस्थान नई दिल्ली, सुश्री अनुजा परचुरे सामाजिक कार्यकर्ता और दीनदयाल शोध संस्थान नई दिल्ली की प्रबंधन समिति की सदस्या, श्री अमिताभ वशिष्ठ महाप्रबंधक, दीनदयाल शोध संस्थान नई दिल्ली, सीएयू के अंतर्गत कॉलेजों के डीन, विस्तार शिक्षा निदेशक (डीईई), सीएयू, भारतीय किसान संघ, उत्तर पूर्वी क्षेत्र के सदस्य, अरुणाचल प्रदेश के एफपीओ और एफपीसी, किसान और केवीके तवांग और पश्चिम कामेंग के प्रमुख और एसएमएस शामिल हुए।

विक्रमोत्सव के अंतर्गत राजधानी दिल्ली में हुआ ‘सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य’ का महामंचन

विक्रम सम्वत् मात्र एक पंचांग या नववर्ष नहीं, बल्कि यह भारतीय आत्मा, अस्मिता और गौरव का है प्रतीक

महानाट्य के दृश्यों को सजीव बनाने के लिए पालकी, रथ, घोड़ों और एलईडी ग्राफिक्स के स्पेशल इफेक्ट का प्रयोग

नई दिल्ली/ दीनदयाल शोध संस्थान, संस्कार भारती दिल्ली, विक्रमादित्य शोध पीठ, संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश सरकार के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली के लाल किले के माधोदास पार्क में 12-14 अप्रैल 2025 को प्रतिदिन साँय 6 से 9 बजे विक्रांत भारत के विराट पुरुष “सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य” का महामंचन किया गया।

कार्यक्रम के उद्घाटन कार्यक्रम में भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम श्री जगदीप धनखड़ जी, भारत सरकार के संस्कृति मंत्री श्री गजेन्द्र शेखावत जी, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव जी और दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर 11 अप्रैल को इसी कार्यक्रम के निमित्त सांय 5 बजे एक शोभायात्रा का आयोजन दिल्ली के फतेहपुरी चौक से लालक़िले तक किया गया। इस यात्रा का उद्घाटन दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी के द्वारा किया गया।

विक्रमोत्सव भारत के उत्कर्ष और नव जागरण का ऐसा अभियान है, जो

अब नहीं रुकेगा। विक्रमोत्सव ने भारत की सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक गौरव और राष्ट्रीय पुनर्जागरण के अभियान ने एक नई ऊर्जा और उत्साह के साथ जनमानस में स्थान बनाया है।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बताया कि मध्य प्रदेश विरासत से विकास की थीम के अंतर्गत 14 जनवरी 2025 (संक्रांति) से गीता जयंती तक पूरे प्रदेश में श्रीकृष्ण पाथेय और सांस्कृतिक विरासत के विभिन्न पहलुओं को जन-जन से जोड़ा गया है। इस संकल्पना के केंद्र में हैं उज्जयिनी के सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य, जिन्होंने 57 ईसा पूर्व शकों को पराजित कर विक्रम सम्वत् की स्थापना की थी।

विक्रम सम्वत् पंचाग मात्र नहीं, भारतीय आत्मा, अस्मिता और गौरव का प्रतीक

विक्रम सम्वत् मात्र एक पंचांग या नववर्ष नहीं, बल्कि यह भारतीय आत्मा, अस्मिता और गौरव का प्रतीक है। सम्राट विक्रमादित्य के शासनकाल को रामराज्य के बाद सुशासन, धर्म, न्याय और संस्कृति का स्वर्ण युग माना जाता है। उनके नौ रत्नों— कालिदास, वराहमिहिर, धन्वंतरि, अमरसिंह आदि ने साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद और सुरक्षा नीति में अद्वितीय योगदान दिया। उनके समय में भारत की सीमाएँ ईरान, तुर्किस्तान, सुमेर, मिस्र तक विस्तृत थीं।

विक्रमोत्सव 2025 : अनेकता में एकता का विराट महोत्सव

वर्ष 2025 का विक्रमोत्सव एशिया का सबसे बड़ा धार्मिक उत्सव और अब विश्व का सबसे दीर्घकालीन एवं बहुआयामी उत्सव बन गया है। इसके प्रथम चरण में 250 से अधिक सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक और साहित्यिक गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिनमें कलश यात्रा, विक्रम व्यापार मेला, नाट्य समारोह, विज्ञान समागम, अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, कवि सम्मेलन, ड्रोन शो और श्रीमती श्रेया घोषाल, श्री हंसराज रघुवंशी और श्री आनंदन शिवमणि जैसे कलाकारों की प्रस्तुतियाँ शामिल रहीं।

सम्राट विक्रमादित्य महानाट्य : भारत के प्राचीन गौरव की गाथा

सम्राट विक्रमादित्य पर केंद्रित भव्य महानाट्य की प्रस्तुतियाँ उज्जैन, इंदौर, भोपाल, हैदराबाद, प्रयागराज, अयोध्या सहित अनेक नगरों में हो चुकी हैं। इसकी 50वीं ऐतिहासिक प्रस्तुति 12-14 अप्रैल को दिल्ली के लाल किले में हुई। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री जेपी नड्डा और दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने भी मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी की पहल को सराहा और प्रशंसा की। इस मंचन में अयोध्या की खोज, मंदिर निर्माण, शासन की न्यायप्रियता, संस्कृतिपरक दृष्टि और सम्राट विक्रमादित्य की सार्वभौमिक विजयों को जीवंत रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है।

शोध और प्रमाणों का संकलन

विक्रमादित्य पर गहन शोध, अभिलेखीय प्रमाण, मुद्राएँ, स्थापत्य और शिलालेख उज्जैन की महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा पिछले 15 वर्षों से संकलित और प्रस्तुत किए

जिसे शीघ्र ही सार्वजनिक किया जाएगा।

भारत की सांस्कृतिक पुनर्रचना का प्रतीक

विक्रमोत्सव केवल सांस्कृतिक आयोजन नहीं, यह भारत की आत्मा को जागृत करने का एक अनवरत अभियान बन चुका है। इसमें शिवरात्रि मेलों, सूर्योपासना, साहित्य, इतिहास, न्याय, खगोल, संगीत, नाट्य और भोजन संस्कृति तक का समावेश है। लाल किले पर आयोजित प्रदर्शनियों में मध्य प्रदेश की उपलब्धियाँ, वैदिक भारत, ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट और भारतीय ऋषि वैज्ञानिक परंपरा जैसे विषयों को प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्पेशल इफेक्ट से सब कुछ लगा रीयल

तीन दिन तक चलने वाले इस महानाट्य के दृश्यों को सजीव बनाने के लिए पालकी, रथ, घोड़ों और एलईडी ग्राफिक्स के स्पेशल इफेक्ट का प्रयोग किया गया। कार्यक्रम में महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा 'विक्रमादित्यकालीन मुद्रा और मुद्रांक' की प्रदर्शनी लगाई गई। भारतीय ऋषि वैज्ञानिक परंपरा पर केंद्रित **'आर्ष भारत'** प्रदर्शनी का भी आयोजन हुआ। इसमें 100 से अधिक ऋषियों के जीवन और

जा रहे हैं। सम्राट विक्रमादित्य के कार्यों की ऐतिहासिकता को चीनी यात्री ह्वेनसांग, मध्य-एशिया के इतिहासकार अलबरूनी सहित कई अन्य विदेशी इतिहासकारों ने भी मान्यता दी है।

विक्रमादित्य वैदिक घड़ी : कालगणना की भारतीय दृष्टि

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा उद्घाटित विक्रमादित्य वैदिक घड़ी भारत की प्राचीन कालगणना पर आधारित आधुनिकतम नवाचार है। इसका डिजिटल ऐप भी तैयार है,

योगदान को प्रदर्शित किया गया। जनसंपर्क विभाग द्वारा 'मध्य प्रदेश का विकास एवं उपलब्धियां' विषय पर और पर्यटन एवं उद्योग विभाग द्वारा भी प्रदर्शनियां लगाई गई।

फूडकोर्ट में रहे एमपी के खास व्यंजन

दूसरी ओर, कार्यक्रम स्थल पर मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा कार्यक्रम स्थल में फूडकोर्ट लगाया गया। इसके माध्यम से दर्शकों ने प्रदेश के पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद लिया।

फूडकोर्ट में प्रदेश के विभिन्न अंचलों के पकवान- बघेलखंडी निमोना, मालवा की कॉर्न पेटिस और भुट्टे की कीस, इंदौरी पोहा और विंध्य की इंद्रहार-कढ़ी-भात उपलब्ध रहे। प्रदेश के विशिष्ट पेय जैसे सन्नाटा, नींबू पुदीना, आम पन्ना, सब्जा शिकंजी, गुलाब लस्सी, कुल्हड़ चाय, प्रसिद्ध मिष्ठान जैसे मावा बाटी, जलेबी और श्रीअन्न व्यंजन जैसे कोदो भात, कुटकी गुड खीर और सवां खीर भी मेनू में शामिल किए गए।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय हिरक महोत्सवः एकात्म मानवदर्शन के 60 वर्षों का उत्सव

राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर चल रही विभिन्न योजनाओं में पंडित दीनदयाल जी के मूल्यों की मिलती है झलक, एकात्म मानवदर्शन का स्पष्ट दिखाई देता है प्रभाव

मुंबई/ पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानवदर्शन और अंत्योदय सिद्धांतों का 60वां हिरक महोत्सव 22-25 अप्रैल 2025 को दीनदयाल शोध संस्थान एवं लोढ़ा फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में रामनारायण रुईया महाविद्यालय माटुंगा, मुंबई में आयोजित किया गया। जिसमें भू सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, भारत का स्व, लोकमत परिष्कार एवं विकास की भारतीय अवधारणा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चार दिन तक देश भर के विशेषज्ञ विद्वत जनों द्वारा चिंतन किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन 22 अप्रैल को केन्द्रीय संसदीय कार्य मंत्री श्री किरण रिजिजू और तमिलनाडु के राज्यपाल श्री आर. एन. रवि द्वारा किया गया, इस दौरान महाराष्ट्र सरकार के कौशल विकास मंत्री श्री मंगल प्रभात लोढ़ा, सांस्कृतिक कार्य मंत्री श्री आशीष शेलार, श्री एस के जैन, श्री अमिताभ सिंह चीफ पोस्ट मास्टर जनरल, दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री निखिल प्रभाकर मुंडले, प्रधान सचिव श्री अतुल जैन की विशेष उपस्थिति रही।

23 अप्रैल को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक डॉ मनमोहन वैद्य द्वारा भारत का स्व और माननीय सह सरकार्यवाह डॉ कृष्ण गोपाल जी द्वारा भू सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सारगर्भित उद्बोधन हुआ। तीसरे दिन 24 अप्रैल को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्री सुनील अंबेडकर जी द्वारा वर्तमान संदर्भ में लोकमत परिष्कार

एवं श्री रविंद्र महाजन द्वारा एकात्म मानव दर्शन के साधक विषय पर उद्बोधन हुआ। 25 अप्रैल को वरिष्ठ प्रचारक श्री सुरेश सोनी जी द्वारा विकास की भारतीय अवधारणा पर उद्बोधन हुआ। इसके अलावा केंद्रीय वाणिज्य मंत्री श्री पीयूष गोयल जी द्वारा आर्थिक चिंतन एवं महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री सी पी राधाकृष्णन जी तथा भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री शिव प्रकाश जी एवं डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री अनिर्बान गांगुली का भी एकात्म मानवदर्शन पर सारगर्भित उद्बोधन हुआ।

प्रथम दिवस पर उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए दीनदयाल शोध संस्थान के महाप्रबंधक श्री अमिताभ वशिष्ठ ने बताया कि अप्रैल 1965 में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पहली बार रुईया महाविद्यालय में 'एकात्म मानवदर्शन' और 'अंत्योदय' जैसे विचारों की प्रस्तुति की थी, जो भारत की प्रगति की आत्मा, संस्कृति और स्थायित्व की दिशा देने वाले थे। उसी ऐतिहासिक स्थान पर, उसी दिन, 60 वर्ष बाद, 22 से 25 अप्रैल 2025 के दरम्यान 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानवदर्शन हिरक महोत्सव' का आयोजन किया गया है।

महाराष्ट्र सरकार के सांस्कृतिक कार्य मंत्री श्री आशीष शेलार ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि पंडित दीनदयाल जी ने इसी प्रांगण से पूरे देश दुनिया को जब बहुत बड़ा कंफ्यूजन था, दुनिया दो अलग-अलग राहों पर खड़ी थी, उस समय भारत कौन सी राह पर चलना चाहिए, उसका मार्ग प्रशस्त किया था।

'पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानवदर्शन हिरक महोत्सव समिति' के अध्यक्ष एवं महाराष्ट्र सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री मंगल प्रभात लोढ़ा ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय

राजनीति में एक अनोखी वैचारिक धारा प्रवाहित की। 'एकात्म मानवदर्शन' और 'अंत्योदय' जैसे सिद्धांत प्रस्तुत कर उन्होंने समाज के अंतिम व्यक्ति के विकास के लिए मार्ग प्रशस्त किया। आज माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, गृह मंत्री श्री अमित शाह जी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस जी के कार्यों में भी एकात्म मानवदर्शन का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। आज राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर चल रही विभिन्न योजनाओं में पंडित दीनदयाल जी के मूल्यों की झलक मिलती है।

अन्न, वस्त्र, आवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो, शिक्षा, नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित हो – इन सभी बातों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है। पंडित जी के विचार केवल सैद्धांतिक नहीं थे, बल्कि उन्होंने आम आदमी के उत्थान के लिए क्रियाशील मार्ग भी दिखाया। आज जब हम उनके विचारों की पुनः समीक्षा कर रहे हैं, तब हमें अपने कार्यों में उनका प्रतिबिंब दिखाना चाहिए, यही इस महोत्सव का उद्देश्य है।

केन्द्रीय संसदीय कार्य मंत्री श्री किरण रिजिजू ने अपने मुख्य आतिथ्य उद्बोधन में कहा कि एकात्म मानववाद एक ऐसा विचार है, दर्शन है जो प्रैक्टिकल है। दुनिया में बहुत सारे दर्शन हैं, विचार हैं वह अच्छे हैं और आध्यात्मिक ज्ञान के लिए भी फायदेमंद है, लेकिन वह प्रैक्टिकल नहीं होता है। एकात्म दर्शन का हमारे जीवन में उपयोग और हमारे देश के लिए यह कितना प्रभावशाली रहा है यह हम लोग देख रहे हैं। इसीलिए मैं मानता हूं कि आज के युग में फिर से दीनदयाल जी के जीवन पर जो भी पुस्तक हैं और उनके विचार रहे हैं उन पर अध्ययन की आवश्यकता है।

1947 के बाद हमारा देश आर्थिक रूप से बहुत ज्यादा प्रगति तो नहीं कर पाया लेकिन बुद्धिमता की बात करें तो हम सब लोग आज भी दुनिया के संपन्न लोगों से कम नहीं है। प्राचीन काल से हमारे पास जो ज्ञान है वह किसी राष्ट्र के पास नहीं है। हमारे पास जो सभ्यता है, अनुभव है उसके लिए चीन से लेकर जापान, कोरिया तक हमको गुरु मानते हैं। यह इंडिया से आया मतलब हमको जरूर कुछ सिखाने को आया होगा, हमको सुपीरियर मानते हैं। यूरोप तो हमारी तुलना में जंगली था बाद में आगे आया। हम लोग प्राचीन काल से बहुत आगे थे। लेकिन ऐसा कौन सा कारण है जिससे हम गरीब हो गए। 1947 में जब आजादी मिली तो कपड़े से लेकर खाना पीना सब कुछ हमने अंग्रेजी शैली को अपनाया और आर्थिक विकास का मॉडल सोवियत यूनियन का रहा। ऐसे में देश का रास्ता हमें कैसे दिखाई देगा कि हमें सही रास्ते पर जाना है, हम पूरी तरह दिशाहीन ही रहे। पंचवर्षीय योजनाएं तो बनती रही लेकिन कभी भी बताया नहीं गया कि भारत कब विकसित राष्ट्र बनेगा।

2014 के बाद मैंने पहली बार देखा कि अब लक्ष्य दिखाई देने लगा है। मोदी जी ने कहा हमने 75 वर्ष ऐसे ही बर्बाद कर दिए लेकिन अब देश 100 साल का आजादी का पर्व मनाएगा

तब भारत विकसित राष्ट्र बन जाएगा, यह लक्ष्य तय किया है। जब आपके पास लक्ष्य ही नहीं है, दिशा ही नहीं है, तो देश कैसे आगे बढ़ेगा। मैं जिस क्षेत्र से आता हूं वहां 5-5 दिन चलने के बाद बिजली दिखाई देता था, गाड़ी दिखाई देता था। 2014 में मोदी जी के आने के बाद हमारे हरेक गांव में बिजली पानी पहुंच गया है, हमारे यहां विकास का हरेक चीज पहुंच रहा है। जब आप गौर करेंगे तो देखेंगे कि प्रधानमंत्री जी का इकोनामिक वेलफेयर पॉलिसी शत प्रतिशत पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद दर्शन से प्रभावित रहा है।

हीरक महोत्सव के अंतिम दिन केंद्रीय वाणिज्य मंत्री श्री पीयूष गोयल ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज बहुत सारी याद रुईया कॉलेज में आ रही है, मेरा पूरा बचपन इसी क्षेत्र में गुजरा है, बचपन से ही यहां शाखा में भी गए, सामाजिक कार्य भी किया और राजनीतिक काम भी यहीं पर किया। मैं साधुवाद देता हूं आयोजक मंडल को जिन्होंने ढूंढ निकाला कि दीनदयाल जी ने 60 वर्ष पूर्व 22 से 25 अप्रैल को इसी रुईया कॉलेज के प्रांगण से एकात्म मानववाद की आधारशिला रखी थी। हमने बचपन से ही एकात्म मानववाद को पढ़ा है, समझा है और थोड़ा बहुत सीखा भी है और इन 11 वर्षों में कोशिश भी की है कि उसे आत्मसात करें, अपने कामों में लागू करें।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री सुरेश सोनी जी ने विकास की भारतीय अवधारणा पर अपने सारस्वत उद्बोधन में कहा कि आज से 60 वर्ष पूर्व दीनदयाल जी ने जो विचार रखे थे वह आज के समय में भी उतने ही सार्थक हैं और ऐसा लगता है कि आने वाले समय में भी इतने ही प्रासंगिक साबित होंगे। उन्होंने जो दिशा एकात्म मानव दर्शन में दी उसमें उन्होंने विकास की अवधारणा के बारे में भी दिया है। विकास की अवधारणा का संबंध केवल भारत के संदर्भ में ही नहीं है, आजकल विभिन्न सभ्यताओं का प्रभाव भी एक दूसरे पर पड़ता है। आजकल सबसे ज्यादा प्रचलित शब्द है

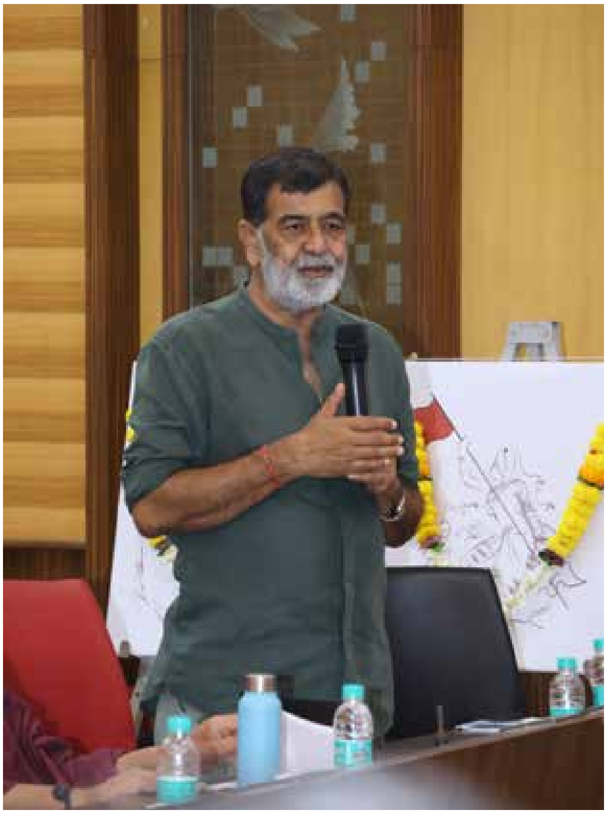

वह है विकास। दुनिया में देश का विभाजन भी इसी आधार पर वर्गीकरण करने की प्रथा चली है, विकसित राष्ट्र-विकासशील राष्ट्र और अविकसित राष्ट्र... दुनिया को आगे बढ़ाना है तो क्या होना चाहिए विकास होना चाहिए।

1972 से विश्व के देश परस्पर मिलकर अर्थ समिट की प्रक्रिया प्रारंभ हुई, उनकी थीम भी देखेंगे तो यही रहेगा, कभी रहेगा डेवलपमेंट तो कभी रहेगा सस्टेनेबल डेवलपमेंट, कभी रहेगा सस्टेनेबल और इक्विटेबल डेवलपमेंट, कभी डेवलपमेंट और सोसाइटी, कभी डेवलपमेंट और एनवायरनमेंट, सभी के मन में है डेवलपमेंट होना चाहिए तो इसमें स्वप्न भी देखे जाते हैं।

भारतीय विचार अपनी जगह है, लेकिन आज की दुनिया जो चल रही है जो पाश्चात्य सभ्यता का जो वर्ल्ड व्यू है, उसका जो पैटर्न है, उसकी जो वैल्यूज हैं, उसकी जो पॉलिसीज हैं, पद्धतियां हैं उससे चल रहा है। दीनदयाल जी ने यह नहीं कहा कि मैं कोई नई बात कह रहा हूं उन्होंने वही कहा जो भारतीय परंपरा में सनातन काल से कहा गया है,

उसी को मैं थोड़ा युगानुकूल भाषा के साथ रख रहा हूं। आजकल जो दुनिया में चल रहा है, जो वेस्टर्न डेवलपमेंट हुआ, जो न्यूटोनियन कार्टेशियन जिसे कहते हैं वर्ल्ड व्यू के अंदर उसमें टुकड़ों टुकड़ों में विचार हुआ। तो पूरे विश्व में ऐसा विचार बना कि दुनिया में मनुष्य को सुखी करना है तो उसकी जो भी इच्छाएं हैं वह पूरी होनी चाहिए, तो वह उपभोग सामग्री होना चाहिए।

जब डेवलपमेंट की बात आती है तो जीडीपी के अनुसार जो मानक बनते हैं वह आर्थिक बनते हैं। भारतीय परंपरा में मूल रूप से कहा गया है कि दुनिया में जो भी इकाइयां हम देखते हैं वह एक हैं, वह एक ही अभिव्यक्ति है तो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। और जब एक दूसरे से जुड़े हैं तो इसका मॉडल क्या होगा, तो इस आधार पर हमारे पूर्वजों ने कहा कि जो बेस्ट मॉडल आपको दिखाई देगा जिसमें अलग-अलग तरह और प्रकृति के लोग एक होकर रहे तो वह है एक परिवार। इसीलिए भारत ने एकात्मता का जो विचार है उसमें जीवन के अंदर व्यवहार में लाने के लिए जो कॉन्सेप्ट डेवलप हुआ वह परिवार के रूप में हुआ। इसीलिए वेस्टर्न व्यू में इंडिविजुअल बिल्डिंग ब्लॉक है और भारतीय परंपरा में फैमिली बिल्डिंग ब्लॉक है और यह फैमिली बिल्डिंग ब्लॉक है इसी को ही आगे बढ़ाते हुए परिवार फिर संयुक्त परिवार उसके बाद जिस गांव में जन्म लिया वह पूरा गांव मेरा एक परिवार और बढ़ाते बढ़ाते हर जगह उसे लागू किया और फिर आगे चलकर जिस राज्य और देश में मैंने जन्म लिया वह भी मेरा एक परिवार है, आगे चलकर संपूर्ण विश्व एक परिवार है। यह जो फैमिली कॉन्सेप्ट है वह प्रारंभ से लेकर वसुधैव कुटुंबकम तक भारत की विशेषता यह उन्होंने एक मॉडल बताया। परिवार में सब पलते हैं, लेकिन पूंजीवाद की बात करते हैं तो उसमें कहा गया है कि तुम कमाते हो तो तुम खाओ।

एक तरफ हमको आर्थिक दृष्टि से सामर्थ्यशाली होना है। लेकिन जीवन मूल्यों के नाते, जीवन शैली के नाते, अल्टरनेट मॉडल के नाते, भारतीय समाज जीवन को भी उसी दिशा में ले जाना, तो मैं समझता हूं कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जो अमर संदेश है वह हम सबके सामने हैं। दीनदयाल जी ने अपने चारों भाषणों के अंत में जो संदेश दिया था उसमें उन्होंने कहा था कि हम ना तो भारत को ऐसा बनाना चाहते हैं जो अपने पूर्वजों की प्रति छाया हो और ना रूस एवं अमेरिका की तस्वीर बनाना चाहते हैं।

हम क्या चाहते हैं उसको कहते हुए उन्होंने कहा कि विश्व का ज्ञान और हमारी आज तक की परंपरा के आधार पर हम ऐसे भारत का निर्माण करेंगे जो हमारे पूर्वजों के भारत से भी श्रेष्ठ और महान होगा। जिसमें जन्मा मानव अपना समग्र विकास करते हुए संपूर्ण सृष्टि और समाज इन सबके साथ एकात्मता का अनुभव करते हुए नर से नारायण बनने में सक्षम होगा। हमारी शाश्वत देवी प्रवाहमान संस्कृति का यह दिव्य संदेश है कि चौराहे पर खड़ी हुई आज की मानवता के लिए यही हमारा दिग्दर्शन है परमात्मा हमको इस प्रकार का भारत निर्माण करने की प्रेरणा दें।

माँ मंदाकिनी नदी का भूगर्भीय एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने जुटे भूजल वैज्ञानिक

- आईआईटी रुड़की की टीम द्वारा विद्युत प्रतिरोधक टोमोग्राफी तकनीकी का प्रयोग करके भूजल क्षमता का किया आंकलन
- दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा 17 जून को बृह्मकुंड से शुरू की मंदाकिनी अध्ययन यात्रा
- यूपी के जल शक्ति मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह तथा एमपी के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसी राम सिलावट ने वर्चुअली जुड़कर कार्ययोजना अनुरूप कार्य करने की कही बात
- नदी के पुनर्जीवन हेतु अध्ययन दल के सुझावों पर शासन स्तर पर क्रियान्वयन का होगा पूर्ण प्रयास – सांसद श्री गणेश सिंह

चित्रकूट/ माँ मंदाकिनी की अविरल-निर्मल धारा बनाए रखने एवं प्रदूषण मुक्त करने हेतु दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा नदी के पूरे अपवाह क्षेत्र का जलवैज्ञानिक, भूगर्भीय एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में व्यापक अध्ययन किया जा रहा है। नदी क्षेत्र के व्यापक सर्वेक्षण के साथ आगे के लिए एक कार्य योजना तय करने के लिए भूजल वैज्ञानिकों की टोली के साथ मंदाकिनी अध्ययन यात्रा 17 जून को मध्य प्रदेश के मझगवां जनपदीय के पयस्वनी के उद्‌गम स्थल ब्रम्हकुंड, झिरिया घाट से शुरू हुई थी और यमुना जी में मिलन स्थल तक की गई जो कि कूडिन हनुमान जी मंदिर, बरुआ, शबरी प्रपात, बटोही भभका, सती अनुसुइया, टाठी घाट, मोहकमगढ़, स्फटिक शिला, पंचवटी घाट, जानकीकुण्ड, प्रमोदवन, रामनाथ गोयनका घाट, भरत घाट, राघव प्रयाग घाट, रामघाट एवं रायपुर बेराउर, महुआ, सरधुआ, पनौटी, लोहदा, सगवारा, कहेटा माफी, परसौंजा, खजुरिहा सभापुर, बरवारा, बंधुइन, बनकट, कर्वी, सूरजकुण्ड आदि स्थानों तक पहुंची।

यात्रा के दौरान आईआईटी रुड़की के प्रोफेसर श्री आशीष पांडेय एवं उनकी टीम द्वारा विद्युत प्रतिरोधक टोमोग्राफी (ERT) जैसी उन्नत तकनीकी का प्रयोग करके भूजल क्षमता का आंकलन करने के लिए वैज्ञानिकों के एक दल द्वारा पयस्वनी के उद्‌गम स्थल ब्रह्मकुण्ड से मशीनों द्वारा सर्वेक्षण किया जा रहा है। पर्यावरण के अनुकूल सभी भौगोलिक परिस्थितियों,

भूगर्भीय संरचनाओं एवं मानकों का अध्ययन कर 30 प्रतिशत तक जल की क्षमता में वृद्धि करना है।

यात्रा के अंतिम दिन आरोग्य धाम के सभागार में समारोप कार्यक्रम में सतना सांसद श्री गणेश सिंह, नगर पंचायत चित्रकूट अध्यक्ष सुश्री साधना पटेल, पदमश्री उमाशंकर पांडे जल योद्धा, रीवा कमिश्नर श्री बी. एस. जामोद, सी.सी.एफ. श्री राजेश राय, कलेक्टर सतना, डॉ. सतीश कुमार एस, डी.एफ.ओ. सतना श्री मयंक चाँदीवाल, डॉ. अशोक विश्वकर्मा वाल्मी भोपाल क्षेत्र, डॉ. रूपेन्द्र सिंह जेएनयू नई दिल्ली, प्रोफेसर श्री आशीष पांडे आईआईटी रुड़की, आईआईटी रुड़की के प्रोफेसर श्री वसंत यादव, इंजी. ए.के. डहेरिया, मुख्य अभियंता सिंचाई विभाग रीवा, श्री एस.पी. गौतम पूर्व अध्यक्ष सी.पी.सी.बी., इंजी. प्रदीप पांडे एसडीओ सिंचाई विभाग सतना, एस डी ओ फारेस्ट श्री अभिषेक तिवारी, सी.एम.ओ. नगर पंचायत चित्रकूट, श्री अंकित सोनी सहित दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित एवं डॉ. अनिल जायसवाल, श्री राजेंद्र सिंह, डॉ. अशोक पांडे, श्री हरीराम सोनी, डॉ. मनोज त्रिपाठी, डॉ. आर. एस. नेगी, श्री अनिल कुमार सिंह, डॉ. सतीश पाठक प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इनके अलावा उत्तर प्रदेश शासन के जल शक्ति मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह तथा मध्य प्रदेश शासन के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसी राम सिलावट वर्चुअल रुप से जुड़े और अपना संबोधन दिया।

इस अवसर पर सतना सांसद श्री गणेश सिंह ने कहा कि दीनदयाल शोध संस्थान धन्यवाद का पात्र है क्योंकि माँ मंदाकिनी (पयस्वनी) के पुनर्जीवन एवं अविरल धारा हेतु विशेषज्ञों की इतनी बड़ी टीम को बुलाकर तीन दिवसीय अध्ययन का कार्य किया और फिर यह बैठक आयोजित हो रही है जिसमें नदी को पुनर्जीवित करने हेतु अध्ययन दल द्वारा दिए गए सुझावों को शासन स्तर पर भेज कर उनको क्रियान्वित करने का पूर्ण प्रयास किया जाएगा। सभी कानूनों का शक्ति से पालन हो जल्द संवर्धन अभियान, एक पेड़ मां के नाम पर लोगों को जागरूक करके जल, वन क्षेत्र को संरक्षित एवं संवर्धित किया जाए। गौरी सागर बांध बनने के पश्चात मां मंदाकिनी में जल की कमी नहीं रहेगी, वन क्षेत्र में वन विभाग को एजेंसी बनाकर आवश्यक कार्य संपादित कराया जाए तथा दोनों राज्य सरकारों को मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है। चित्रकूट की इस जीवनरेखा को सामूहिक प्रयत्न से पुनर्जीवन प्रदान करेंगे। नदी सूख रही है कई जगह जल स्रोत बंद हो गए हैं उन्हें कैसे खोला जाए इस पर विचार करना होगा, नदियों को पर्यटन स्थल के रूप में भी विकसित कर सकते हैं जिससे रोजगार सृजन होगा और यह सभी कार्य सामूहिक सहयोग एवं पर्यटन

से संपन्न हो सकते हैं।

रीवा कमिश्नर श्री बी.एस. जामोद ने कहा कि चित्रकूट को एक यूनिट के रूप में जोड़कर कार्य करना होगा। गांव के किसान एवं सामान्य जनों को जोड़कर रिचार्ज के लिए आवश्यक सहयोग प्राप्त करना होगा और उनके अनुभवों का लाभ लेकर ही कार्य करना होगा। मोटिवेशन सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है। सी.सी.एफ. श्री राजेश राय ने कहा कि कैचमेंट एरिया के लिए योजना तैयार है। WRD वन विभाग का सहयोग करके बांधों और तटबंधन के साथ जल संरक्षण की दिशा में कार्य करेगा। वन विभाग वाटर बॉडी स्ट्रक्चर में अन्य विभागों के सुझावों के आधार पर तकनीकी सहयोग लेगा। जिससे और बेहतर कार्य हो पाएगा।

पद्मश्री उमाशंकर पांडे ने कहा कि चित्रकूट की पहचान वन, पर्वत और संतों और माँ मंदाकिनी से है। लगभग 120 किलोमीटर की नदी में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के 10 किलोमीटर में नदी की स्वच्छता का कार्य ठीक प्रकार से कर दिया जाए तो मंदाकिनी को स्वच्छ बनाया जा सकता है। साथ ही पहाड़ के ऊपर तालाब एवं कुएँ बनाकर जल संरक्षण का कार्य किया जा सकता है। सघन वृक्षारोपण के साथ जनमानस की भागीदारी अतिआवश्यक है।

उत्तर प्रदेश शासन के जल शक्ति मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि मंदाकिनी चित्रकूट की जीवन रेखा है एवं चित्रकूट अनादिकाल से अपना धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व रखता है इसके लिए कार्य योजना बना कर देने पर शासन स्तर पर पूर्ण सहयोग प्रदान किया जाएगा और वह शीघ्र ही चित्रकूट प्रवास कर आवश्यक सहयोग हेतु संवाद करेंगे ताकि माँ मंदाकिनी अपने पूर्व स्वरूप में अविरल एवं निर्मल रूप से सतत प्रवाहित हो सके।

मध्य प्रदेश शासन के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसी राम सिलावट ने कहा कि मंदाकिनी के अस्तित्व के लिए मध्य प्रदेश शासन सतत प्रयत्नशील है और इसके लिए यथासंभव सहयोग शासन स्तर से प्रदान किया जाएगा तथा सभी शासकीय नियमों का कड़ाई से पालन करते हुए चित्रकूट को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने के साथ-साथ मां मंदाकिनी को अविरल एवं निर्मल बनाने का सामूहिक भागीदारी से प्रयत्न किया जाएगा इसके लिए शीघ्र ही चित्रकूट का प्रवास कर सभी लोगों के साथ संवाद स्थापित करेंगे और आवश्यक सहयोग प्रदान करने हेतु पूर्ण प्रयास करेंगे।

इस दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन द्वारा सभी अतिथियों एवं भूजल वैज्ञानिकों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। डीआरआई के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि अध्ययन यात्रा व सर्वेक्षण के दौरान जो बातें निकलकर आई उनमें प्रमुख रूप से जो सामान्य बिंदु है उन पर शीघ्र ही प्रमुखता से काम करने की बात कही गई।

मंदाकिनी की प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखने सेवाभावी कार्यकर्ताओं की टीम सुबह 6:30 बजे से सेवा कार्य में रहती है संलग्न

अनवरत जारी है मंदाकिनी स्वच्छता अभियान

दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान में समाजसेवी कार्यकर्ता पूरी तन्मयता से जुटे

चित्रकूट/ भगवान राम की तपोस्थली चित्रकूट में माता अनसुईया जी की घोर तपस्या के बाद प्रकट हुई मंदाकिनी अब कलयुग के प्रथम चरण में ही दूषित नजर आने लगी है। धर्मनगरी चित्रकूट में लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बनी पतित पावनी जीवनदायिनी मां मंदाकिनी नदी को पुनर्जीवन प्रदान करने के लिए 24 मई से दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान में समाजसेवी कार्यकर्ता पूरी तन्मयता से इसमें लगे हुए हैं।

भारत में तीर्थ यात्रा हर एक हिंदू व्यक्ति की जिंदगी का अहम हिस्सा है। इस चार धाम की तीर्थ यात्रा में चित्रकूट एक अहम पड़ाव है। चित्रकूट की यात्रा में कामदगिरि परिक्रमा और मंदाकिनी दोनों का विशेष महत्व है। जाहिर है चित्रकूट की यात्रा हो और इन दोनों महत्वपूर्ण स्थानों का स्पर्श न हो तो यात्रा अधूरी मानी जाती है। इन दोनों ही ऐतिहासिक स्थलों की स्वच्छता व निर्मल मंदाकिनी और उसके संरक्षण को लेकर दीनदयाल शोध संस्थान पिछले कई वर्षों से प्रयासरत है।

दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं द्वारा संगठन सचिव श्री अभय महाजन के नेतृत्व में मां मंदाकिनी नदी की स्वच्छता हेतु श्रम कार्य किए जा रहे हैं।

दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि कार्यकर्ताओं में उत्साह देखने योग्य है तथा प्रातः काल प्राकृतिक वातावरण में ऐसा श्रमदान स्वास्थ्यवर्धक भी है। सभी लोगों को व्यवहारिक दृष्टि से संकल्प लेना होगा कि मंदाकिनी के आसपास एक-एक वृक्ष लगाकर कम से कम 3 वर्ष तक उसके संरक्षण संवर्धन की चिंता करेंगे तो निश्चित रूप से साकार परिणाम आएंगे। मंदाकिनी महज एक नदी नहीं बल्कि आस्था का केंद्र है।

प्रतिदिन दीनदयाल शोध संस्थान के अलग-अलग प्रकल्पों से एवं चित्रकूट नगर से लगभग 1 सैकड़ा सेवाभावी कार्यकर्ताओं की टीम सुबह 6:30 बजे से सेवा कार्य में संलग्न रहती है।

श्रम सेवा अभियान चलाकर मंदाकिनी की प्राकृतिक सुंदरता को बनाए रखने का प्रयास शुरू किया गया है। संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन इस अभियान को सशक्त बनाए रखने के लिए स्वयं श्रम सेवा कर रहे हैं।

माँ मंदाकिनी पर संगोष्ठी में निर्मल-अविरल प्रवाह के लिए प्रबुद्धजनों ने दिये सुझाव

जन सहभागिता से व्यापक स्वरूप प्रदान करने हेतु गणमान्यजनों से लिए गए सुझाव

चित्रकूट/ माँ मंदाकिनी की निर्मल-अविरल धारा बनाये रखने एवं प्रदूषण मुक्त करने हेतु दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चित्रकूट के पूज्य साधु-संत, चित्रकूटवासी एवं समाजसेवी संस्थाओं के साथ मिलकर दिनांक 24 से 26 मई 2025 को जन-जागरूकता एवं माँ मंदाकिनी स्वच्छता कार्यक्रम चलाया गया।

माँ मंदाकिनी स्वच्छता कार्यक्रम के अन्तर्गत 24 मई शनिवार को दीनदयाल शोध संस्थान के उद्यमिता विद्यापीठ स्थित लोहिया सभागार में संगोष्ठी एवं आगामी कार्ययोजना तय की गई और संगोष्ठी में उपस्थित सभी लोगों से अविरल मंदाकिनी हेतु सुझाव भी लिए गये। अगले दिन 25 एवं 26 मई को प्रातः 6 बजे से रामघाट एवं राघव प्रयाग घाट में जन-जागरुकता एवं सामूहिक स्वच्छता का आयोजन किया गया। स्वच्छता कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के नगरीय प्रशासन मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह, मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष डॉ. मोहन नागर शामिल हुए।

संगोष्ठी में विद्वत जनों और प्रबुद्ध जनों से निर्मल एवं अविरल मंदाकिनी के लिए सुझाव एकत्रित किये गए। ताकि जन सहभागिता से इसे अभियान स्वरूप व्यापक रूप प्रदान किया जा सके। इस अवसर पर आचार्य विपिन विराट ने अपने सुझाव में कहा कि देश भर से 100 लोगों को जोड़कर एक फंड बनाना चाहिए, मां मंदाकिनी के प्रति सभी की श्रद्धा है सभी की एकजुटता से मंदाकिनी का स्वरूप उत्कृष्ट होगा। डॉ. त्रिपाठी कर्वी ने कहा कि सभी जागरूक नागरिक इस काम में लगे यही अपेक्षा है।

अन्नपूर्णा होटल के श्री अरुण गुप्ता ने अपने सुझाव में कहा कि मंदाकिनी जी की धारा को अवरोध करने वाले जो भी कारक हो वे दूर हो, कोई भी गंदगी मंदाकिनी में ना आए।

नया गांव के श्री राममिलन मिश्रा ने कहा कि मंदाकिनी के दोनों तटों पर सघन वृक्षारोपण किया जाए, किसानों को भी आगे आना होगा जिनकी जमीन मंदाकिनी किनारे है वे वृक्षारोपण करें।

समाज सेवी श्री अभिमन्यु जी ने कहा कि नदी को हृदय से देखना होगा, प्रेम से देखना होगा। मंदाकिनी और पयस्वनी इसके दो नाम है। पयस्वनी धारा जो छोटी थी वह खत्म हो रही है। सूरजकुंड में भी इसके स्रोत है, अनसूईया जी से पहले भी इसके स्रोत हैं कई स्रोत खत्म हो चुके हैं, उन्हें देखना होगा। कितना पानी हमें उपयोग में लाना है यह अभी देखना होगा। मंदाकिनी के आसपास की परिधि के पहाड़ों को भी संरक्षित करना होगा।

ग्रामोदय विश्वविद्यालय के डॉ. घनश्याम गुप्ता ने कहा कि जंगल और पर्वत नदी के माता-पिता होते हैं इन्हें बचाना होगा। मंदाकिनी बचाना है तो पहले जंगल और पर्वत बचाना होगा।

दृष्टि संस्था से श्री शंकर लाल गुप्ता ने कहा कि मंदाकिनी को जन अभियान बनाएंगे तो संकल्प सिद्ध होगा।

दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने सभी से आग्रह किया कि हमारे घरों में जब भी कोई भी शादी विवाह या अन्य कार्यक्रम हो तो हम सिंगल उपयोग प्लास्टिक का प्रयोग न करें। भण्डारा प्रसाद परोस में प्लास्टिक थर्मोकोल से बनी सामग्री का उपयोग न करें। गोवंश एवं पर्यावरण के रक्षार्थ, पत्तों से तैयार दोना-पत्तल का अधिकाधिक प्रयोग करें। समाज सेवी श्री अश्वनी अवस्थी ने अपने सुझाव में कहा कि सरकारी अभियान से काम नहीं चलेगा जन जागरूकता जरूरी है।

> **मंदाकिनी के दोनों तटों पर सघन वृक्षारोपण किया जाए, किसानों को भी आगे आना होगा जिनकी जमीन मंदाकिनी किनारे है वे वृक्षारोपण करें।**

मंदाकिनी स्वच्छता हेतु जन अभियान चलाना होगा। इंजी कार्तिकेय द्विवेदी ने कहा कि मंदाकिनी धाराओं में कमी का एक कारण पक्के घाट और कंक्रीट भी है। बोरिंग करने से भी वाटर कम हुआ है। मंदाकिनी उद्गम केल्होरा में बोरिंग बहुत है इसीलिए पानी कम हो रहा है।

पद्मश्री जल पुरुष डॉ. उमाशंकर पांडे ने कहा कि दुनिया में दो नदियां गंगा और गोदावरी तप से आई है। चित्रकूट सामान्य जगह नहीं है। यूपी एवं एमपी दोनों सरकारों को इस पर काम करना होगा। मंदाकिनी में कहां-कहां से पानी आ रहा है इस पर काम करें, हम पानी बना तो नहीं सकते लेकिन बचा सकते हैं।

संतोषी अखाड़ा के पूज्य संत राम जी दास महाराज ने कहा कि नमामि गंगे योजना में मंदाकिनी को भी शामिल करना चाहिए। मंदाकिनी जीवन दायिनी है। इसे संगठित रूप से कार्य रूप में परिणित करना होगा तभी मंदाकिनी अविरल होगी। स्वच्छ होगी। जैसे सरयू और पयस्वनी नदी लुप्त हो गई है इस तरह मंदाकिनी भी लुप्त हो जाएगी।

इस अवसर पर संतोषी अखाड़ा के श्री राम जी दास महाराज, दिगंबर अखाड़ा के श्री दिव्य जीवन दास जी महाराज, दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, पदमश्री उमाशंकर पांडे, पूर्व आईएएस श्री विराग गुप्ता, आईआईटी रुड़की से श्री आशीष पांडे, समाज सेवी श्री अभिमन्यु सिंह, पूर्व मंत्री श्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय, सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट से श्री ऋषि जैन, समाज सेवी श्री रंजन उपाध्याय, सुश्री रवि माला सिंह, सुश्री संगीता जैन, सुश्री अंजू वर्मा, श्री श्याम सुंदर मिश्र, श्री कार्तिकेय द्विवेदी, श्री अरुण गुप्ता, श्री तुषार कांत शास्त्री, श्री आचार्य विपिन विराट, श्री प्रबल राव श्रीवास्तव, श्री अश्विनी अवस्थी, डॉ. अनिल जायसवाल सहित चित्रकूट क्षेत्र की समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि, गणमान्यजन, समाजसेवी भारी संख्या में उपस्थित रहे।

चित्रकूट के रामघाट एवं राघव प्रयाग घाट में सामूहिक स्वच्छता कार्यक्रम में शामिल हुए उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह

निर्मल-अविरल माँ मंदाकिनी के लिए चलाए जा रहे जन-जागरुकता अभियान में भारी संख्या में जुटे चित्रकूट वासी ❖ पूजा-अर्चना, हवन और अभिषेक के दौरान निकलने वाली पूजन सामग्री, फूलमालाओं को उचित सम्मान देने जगह जगह बनेंगे विसर्जन कुंड

चित्रकूट/ धर्मनगरी चित्रकूट में लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बनी पतित पावनी जीवनदायिनी मां मंदाकिनी नदी को पुनर्जीवन प्रदान करने के लिए दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान में संत समाज और समाजसेवी कार्यकर्ता पूरी तन्मयता से इसमें लग गये।

भारत में तीर्थ यात्रा हर एक हिंदू व्यक्ति की जिंदगी का अहम हिस्सा है। इस चार धाम की तीर्थ यात्रा में चित्रकूट एक अहम पड़ाव है। चित्रकूट की यात्रा में कामदगिरि परिक्रमा और मंदाकिनी दोनों का विशेष महत्व है। जाहिर है चित्रकूट की यात्रा हो और इन दोनों महत्वपूर्ण स्थानों का स्पर्श न हो तो यात्रा अधूरी मानी जाती है। इन दोनों ही ऐतिहासिक स्थलों की स्वच्छता व निर्मल मंदाकिनी और उसके संरक्षण को लेकर दीनदयाल शोध संस्थान पिछले कई वर्षों से प्रयासरत है।

माँ मंदाकिनी की निर्मल-अविरल धारा बनाये रखने एवं प्रदूषण मुक्त करने हेतु दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चित्रकूट के पूज्य साधु-संत, चित्रकूटवासी एवं समाजसेवी संस्थाओं के साथ मिलकर 24 से 26 मई तक जन-जागरूकता एवं माॅ मंदाकिनी स्वच्छता अभियान शुरू किया। जिसमें संत समाज सहित चित्रकूट क्षेत्र के समाजसेवी कार्यकर्ता और चित्रकूट वासी पूरी तन्मयता से इस अभियान का हिस्सा बने। स्वच्छता अभियान के दूसरे दिन रामघाट एवं राघव प्रयाग घाट में सामूहिक स्वच्छता कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह, जल शक्ति राज्य मंत्री श्री रामकेश निषाद भी शामिल हुए। इस अवसर पर चित्रकूट के पूर्व सांसद श्री

भैरों प्रसाद मिश्र, यूपी के पूर्व मंत्री श्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय, पदमश्री जल पुरुष डॉ. उमाशंकर पांडेय, रीवा कमिश्नर श्री बी.एस. जामोद, आईआईटी रूड़की से प्रो. आशीष पांडेय, पूर्व आईएएस श्री विराग गुप्ता, चित्रकूट के जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, बांदा जिला सहकारी बैंक के चेयरमैन पंकज अग्रवाल, सामाजिक कार्यकर्ता श्री अश्विनी अवस्थी, श्री आलोक पांडेय, श्री प्रवलराव श्रीवास्तव सहित दीनदयाल शोध संस्थान के सभी प्रकल्पों के कार्यकर्ता और भारी संख्या में चित्रकूट वासी शामिल हुए।

इस दौरान यूपी के जल शक्ति मंत्री श्री स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि समाज और शासन के प्रयास से मां मंदाकिनी स्वच्छता के लिए इस तरह का अभियान चलता रहेगा।

जन जागरुकता के माध्यम से दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने चित्रकूट में आम जन-मानस से विनम्र

गोवंश एवं पर्यावरण के रक्षार्थ, पत्तों से तैयार दोना-पत्तल का अधिकाधिक प्रयोग करें। माँ मंदाकिनी में साबुन-शैम्पू आदि का उपयोग न करें।

आग्रह किया है कि नदी के जल ग्रहण क्षेत्र में अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर उनकी देख-रेख दो-तीन वर्षों तक करें। सिंगल उपयोग प्लास्टिक का प्रयोग न करें। भण्डारा प्रसाद परोस में प्लास्टिक थर्मोकोल से बनी सामग्री का उपयोग न करें। गोवंश एवं पर्यावरण के रक्षार्थ, पत्तों से तैयार दोना-पत्तल का अधिकाधिक प्रयोग करें। माँ मंदाकिनी में साबुन-शैम्पू आदि का उपयोग न करें। स्वच्छ चित्रकूट सुन्दर चित्रकूट लक्ष्य को साकार करने में सहभागी बन पुण्य लाभ अर्जित करें।

इस अवसर पर श्री महाजन ने कहा कि बाहर से आने वाले श्रद्धालु और चित्रकूट के लोग घरों में पूजा-अर्चना, हवन और अभिषेक के दौरान निकलने वाली पूजन सामग्री, फूलमालाओं को सीधे मंदाकिनी जी में प्रवाहित करते हैं। इससे नदी का पानी प्रदूषित हो रहा है। साथ ही घाट पर गंदगी भी फैलती है। हवन और पूजन सामग्री के विसर्जन से नदी या जलस्रोत में प्रदूषण होता है। इसे रोकने के लिए प्रत्येक मठ मंदिरों एवं प्रमुख स्थानों

तथा घाट के किनारों पर विसर्जन कुंड बनाये जाने का निर्णय लिया गया है। विसर्जन कुंड पूजा के बाद बचे सामान को उचित सम्मान देने का एक श्रेष्ठ तरीका है। इसके अलावा मंदाकिनी जी की स्वच्छता अभियान को अनवरत रखते हुए प्रत्येक शनिवार एवं रविवार को सेवाभावी लोग एवं सामाजिक संस्थाओं के लोग श्रम साधना का हिस्सा बने रहे ऐसी योजना की गई।

निर्मल-अविरल मां मंदाकिनी के लिए जन-जागरुकता अभियान का तीसरा दिन

चित्रकूट के भरत घाट एवं राघव प्रयाग घाट में मां मंदाकिनी सफाई अभियान में शामिल हुए सतना के प्रभारी मंत्री श्री विजयवर्गीय और यूपी के श्रम और रोजगार राज्य मंत्री श्री मनोहर लाल पंथ

सामूहिक श्रमदान से लोगों में जागरूकता पैदा होगी और नदियों को स्वच्छ रखने का संदेश भी जायेगा
– मंत्री कैलाश विजयवर्गीय

चित्रकूट/ नदियां हमारी संस्कृति की संवाहक और जीवनदायिनी हैं। उनका संरक्षण एवं संवर्धन करना प्रत्येक संवेदनशील नागरिक का नैतिक कर्तव्य है। इसी पुनीत भावना के साथ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा जन सहभागिता के साथ चलाएं गये मां मंदाकिनी नदी के सफाई अभियान के तीसरे दिन मध्य प्रदेश के नगरीय विकास एवं आवास मंत्री तथा सतना जिले के प्रभारी मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, राज्य मंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री श्री मन्नू कोरी ने चित्रकूट में पुण्य सलिला मां मंदाकिनी के पावन तट पर श्रमदान करते हुए स्वच्छता अभियान में सहभागिता कर साफ सफाई की।

मध्य प्रदेश के नगरीय विकास एवं आवास मंत्री तथा सतना जिले के प्रभारी मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय अपने चित्रकूट प्रवास के दूसरे दिन मां मंदाकिनी नदी के सफाई अभियान में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के आह्वान पर जल गंगा संवर्धन अभियान में दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट द्वारा जनसहयोग से मां मंदाकिनी को निर्मल और स्वच्छ रखने सफाई अभियान शुरू किया गया है। डीआरआई का जन सहभागिता से किए जाने वाला यह प्रयास निसंदेह सराहनीय हैं। उन्होंने कहा कि नगरीय विकास एवं आवास राज्य मंत्री श्रीमती

सामूहिक श्रमदान से सभी लोगों में जागरूकता पैदा होगी और नदियों को साफ स्वच्छ रखने का संदेश भी जायेगा। प्रभारी मंत्री ने कहा कि चित्रकूट की पवित्र मंदाकिनी नदी की सफाई और गाद निकालने का कार्य साल भर चलेगा।

प्रतिमा बागरी, उत्तर प्रदेश सरकार के श्रम और रोजगार राज्य मंत्री श्री मनोहर लाल पंथ (मन्नू कोरी), विधायक चित्रकूट श्री सुरेंद्र सिंह गहरवार, विधायक मैहर श्रीकांत चतुर्वेदी, दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष डॉ. मोहन नागर, नगर पंचायत अध्यक्ष सुश्री साधना पटेल, भाजपा सतना के जिलाध्यक्ष श्री भगवती प्रसाद पांडे, प्रशासनिक अधिकारियों एवं चित्रकूट के स्थानीय नागरिकों के

साथ नदी सफाई अभियान में हिस्सा लिया है।

सामूहिक श्रमदान से सभी लोगों में जागरूकता पैदा होगी और नदियों को साफ स्वच्छ रखने का संदेश भी जायेगा। प्रभारी मंत्री ने कहा कि चित्रकूट की पवित्र मंदाकिनी नदी की सफाई और गाद निकालने का कार्य साल भर चलेगा। मानव संसाधन के अलावा इस कार्य में मशीनों की भी आवश्यकता

होगी। प्रभारी मंत्री ने कहा कि मशीनों और आवश्यकतानुसार मैन पावर के सहयोग से मां मंदाकिनी को निर्मल और स्वच्छ रखा जाएगा।

इस दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि लोगों में उत्साह देखने योग्य है। सभी लोगों को व्यवहारिक दृष्टि से संकल्प लेना होगा कि नदी के जल ग्रहण क्षेत्र में अधिक से अधिक वृक्षारोपण कर उनकी देख-रेख दो-तीन वर्षों तक करें। ऐसा करके निश्चित रूप से साकार परिणाम आएंगे, मंदाकिनी महज एक नदी नहीं बल्कि आस्था का केंद्र है।

इस मौके पर सतना के प्रभारी मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, राज्य मंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी, उत्तर प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री श्री मन्नू कोरी, विधायक चित्रकूट श्री सुरेंद्र सिंह गहरवार, मैहर श्री कांत चतुर्वेदी, मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष डॉ. मोहन नागर, नगर पंचायत अध्यक्ष सुश्री साधना पटेल, जिलाध्यक्ष श्री भगवती प्रसाद पांडे, डी आर आई के संगठन सचिव श्री अभय महाजन, पूर्व स्पीकर नगर निगम सतना श्री अनिल जायसवाल, कमिश्नर रीवा श्री बी.एस. जामोद, डीआईजी रीवा श्री गौरव राजपूत, कलेक्टर सतना डॉ. सतीश कुमार एस, पुलिस अधीक्षक सतना श्री आशुतोष गुप्ता, एसडीएम चित्रकूट श्री जितेंद्र वर्मा सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, जन अभियान परिषद और डी आर आई के कार्यकर्ता, स्वयं सेवक, नगर पंचायत के कर्मचारी एवं स्थानीय नागरिकों ने मां मंदाकिनी के भरत घाट में पानी में उतर कर नदी के तलहटी में जमा घास और मलवे नुमा गाद निकालने के कार्य में श्रम दान किया। इस मौके पर स्टार समूह के चेयरमैन श्री रमेश सिंह, संपादक श्री संजय गौतम, जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक डॉ. राजेश तिवारी, बालेंद्र गौतम, श्री विजय तिवारी, श्रीमती कृष्णा पांडे, श्री अवध बिहारी मिश्रा, कृषि वैज्ञानिक श्री आर.एस. नेगी, श्री प्रबल श्रीवास्तव ने भी श्रम दान में हिस्सा लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां एवं गनीवां तथा जन शिक्षण संस्थान में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम

विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 11 महिलाओं एवं 3 नमो ड्रोन दीदी को किया गया सम्मानित

केवीके में ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं द्वारा पलाश के फूलों से तैयार हर्बल गुलाल को मंत्री बागरी एवं कलेक्टर सतना सहित सभी अतिथियों को किया वितरण

चित्रकूट-मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केन्द्र, मझगवां, सतना में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अभय महाजन, संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा की गयी। मुख्य अतिथि श्रीमती प्रतिभा बागरी राज्य मंत्री नगरीय विकास एवं आवास मध्य प्रदेश, डॉ. सतीश कुमार एस कलेक्टर सतना, विशिष्ट अतिथि श्रीमती ममता पाण्डेय पूर्व महापौर सतना, श्रीमती विमला पाण्डेय पूर्व महापौर सतना, श्रीमती सुष्मिता सिंह परिहार जिला पंचायत उपाध्यक्ष सतना, श्रीमती रेणुका जायसवाल जनपद पंचायत अध्यक्ष मझगवां, श्रीमती सरोज यादव समाज शिल्पी दंपति दीनदयाल शोध संस्थान, श्री सौरभ सिंह जिला समन्वयक महिला बाल विकास सतना, श्री राजेश मौर्या क्षेत्रीय प्रबंधक इफको सतना एवं जिले की 248 प्रगतिशील महिलाओं की सहभागिता रही।

कार्यक्रम का शुभारम्भ भारतमाता, भारत रत्न नानाजी देखमुख एवं पं. दीनदयाल जी की मूर्ति पर दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। इस कार्यक्रम की रूपरेखा केन्द्र के प्रभारी डॉ. अखिलेश कुमार जागरे द्वारा रखी

गयी। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. हेमराज द्विवेदी ने संस्थान द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण, स्वावलंबन, आत्म-निर्भरता, स्वास्थ्य, जागरूकता एवं पोषण के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी साझा की। श्री राजेश मौर्या क्षेत्रीय प्रबंधक इफको द्वारा सतना जिले में नमो ड्रोन दीदी योजना के साथ-साथ महिला स्वावलंबन की विस्तृत जानकारी दी गयी। श्रीमती ममता पाण्डेय ने बताया कि महिलाओं को सशक्त होने के लिए घर से बाहर आना होगा और खुद स्वस्थ्य रहना होगा उसके लिए संतुलित आहार का सेवन करे। श्रीमती विमला पाण्डेय ने कहा कि यह कार्यक्रम सिर्फ आज ही नहीं हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि महिलाओं का सम्मान हमेशा होना चाहिए, **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः** शब्द से संबोधित किया। श्रीमती सुष्मिता सिंह परिहार ने बताया कि हम सभी महिलायें प्रताड़ना से गुजरी हैं साथ ही हमें सब को मिल कर आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनने की ओर अग्रसर होना चाहिए तभी महिला दिवस साकार होगा। श्रीमती रेणुका जायसवाल ने बोला कि दीनदयाल शोध संस्थान महिलाओं के समग्र उत्थान हेतु कार्य कर रहा है।

डॉ. सतीश कुमार एस कलेक्टर सतना ने महिलाओं के स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर विशेष बल देते हुए दीनदयाल शोध संस्थान व महिला बाल विकास विभाग के कार्यो की सराहना की। मध्य प्रदेश की राज्य मंत्री, नगरीय विकास एवं आवास श्रीमती प्रतिभा बागरी ने कहा कि भारत रत्न नानाजी देखमुख की परिकल्पना को साकार रूप देने हेतु हम सभी महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन की दिशा में अग्रसर होकर कार्य करेंगे तभी राष्ट्र का विकास होगा। महिलाओं को पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहिए। श्री अभय महाजन संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान ने कहा कि महिलाओं को एकजुट होकर आगे आना चाहिए, महिला सशक्तिकरण के अनुसार महिलाओं के निर्णय लेने की शक्ति से राष्ट्र का विकास होगा और साथ ही आर्थिक व्यवस्था में भी सुधार होगा। सामाजिक कार्यों में महिलाओं का नेतृत्व करना चाहिए। हमारी संस्कृति में महिलाओं का बहुत सम्मान किया जाता है। हम देवी के रूप में नारी को पूजते हैं। लक्ष्मी, दुर्गा और सरस्वती क्रमशः धन, शक्ति और बुद्धि की देवी हैं। महिला–पुरुष में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं किया जाना चाहिए तभी समाज, गाँव, प्रदेश एवं राष्ट्र का विकास संभव है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पोषण वाटिका, एनीमिया दूर करने, महिला सशक्तिकरण, बच्चों को एन.आर.सी. में भर्ती कराने, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, कृषि, पशुपालन एवं कृत्रिम गर्भाधान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 11 महिलाओं - सुश्री जाना सिंह, सुश्री पूना सिंह, सुश्री सरोज सिंगरौल, सुश्री पूनम तिवारी, सुश्री शीला कुशवाहा, सुश्री उमा प्रजापति, सुश्री विमल कुशवाहा, सुश्री शशि गौतम, सुश्री सुखरानी, सुश्री सुरेंदा सिंह एवं सुश्री विनीत अहिरवार तथा इफको सतना द्वारा 3 नमो ड्रोन दीदी सुश्री निधि सिंह ग्राम डेगरहट, सुश्री वंदना यादव ग्राम चितहरा, सुश्री निधि सिंह ग्राम अमिरिती को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर केवीके की गृह

विज्ञान इकाई में गृह वैज्ञानिक हेमराज द्विवेदी के निर्देशन में ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं द्वारा पलाश के फूलों से तैयार हर्बल गुलाल की पैकिंग मंत्री बागरी एवं कलेक्टर सतना सहित सभी अतिथियों को प्रदान की गई। कृषि विज्ञान केन्द्र से श्री पुष्पेन्द्र सिंह गुर्जर, श्री पंकज शर्मा, श्री अशोक शर्मा, श्री राम प्रकाश पाण्डेय, श्री अरविन्द सिंह, सुश्री रीता सिंह, श्री अभिषेक गौतम, श्री पुनीत गौतम, श्री सुरेन्द्र पयासी का सराहनीय सहयोग रहा।

वहीं एक अन्य कार्यक्रम में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित एवं कौशल विकास उद्यमिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन इस वर्ष की थीम सभी महिलाओं के लिए "कार्रवाई में तेज़ी लाना" (शिक्षा, रोजगार एवं नेतृत्व क्षमता का विकास, लैंगिक समानता में तेजी से प्रगति की ओर अग्रसर) के आधार पर किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ वरिष्ठ भाजपा नेत्री एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती रंजना उपाध्याय, श्रीमती बबिता सिंह प्रबन्ध मण्डल सदस्य, श्रीमती प्रतिभा जायसवाल वनवासी कल्याण केंद्र, अनुदेशक सुश्री कल्पना चौरसिया एवं श्री अनिल कुमार सिंह निदेशक जन शिक्षण संस्थान द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण द्वारा किया गया।

श्री अनिल कुमार सिंह ने कहा कि एक शिक्षित, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर महिला केवल अपना ही नहीं, बल्कि पूरे समाज का भविष्य संवारती है। महिलाओं का सम्मान करें, उनका साथ दें क्योंकि यदि हम एक बालक को पढ़ाएंगे तो एक ही व्यक्ति शिक्षित होगा लेकिन बालिका को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होगा। हमारा ध्येय बालिकाओं एवं महिलाओं को कौशल विकास के ज़रिए आत्मनिर्भर बनाना उन्हें समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाना है।

सुश्री बबिता सिंह ने अपने उद्बोधन में बताया कि महिलाओं को नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का संवर्धन करने के साथ-साथ, संस्कारवान, समर्पण प्रेम का समावेश कर अपने नारायणी स्वरूप को प्रस्तुत करना होगा। श्रीमती प्रीति जायसवाल द्वारा बताया गया कि पोषण, सुरक्षा, प्यार, शिक्षा, स्वावलंबन एवं आत्मसम्मान सभी का अधिकार है। सुश्री कल्पना चौरसिया ने कहा कि समाज के सभी लोगों के सकारात्मक सोच एवं उनके प्रेरक प्रयासों से ही नारी सम्मान और गौरव को बढ़ाया जा सकता है। श्रीमती रंजना उपाध्याय ने बताया कि जीवन की कला को अपने हांथों से साकार कर नारी ने सभ्यता और संस्कृति का रूप निखारा है, नारी का अस्तित्व ही सुंदर जीवन का आधार है। धैर्य, अनुशासन एवं एकाग्रता ही तीन गुण हैं जो हमारे अभेद लक्ष्य को साध सकते है। कार्यक्रम का संचालन श्री बनारसीलाल पाण्डेय द्वारा किया गया। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन प्रभाकर मिश्र ने किया। कार्यक्रम में जेएसएस के श्री अजय पांडेय, श्री सुघर सिंह सहित लगभग 150 महिलाओं ने सहभागिता की।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ही चित्रकूट जनपद के ग्राम रामपुरवा में कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा संचालित योजना जलवायु समुत्थानशील कृषि पर राष्ट्रीय नवाचार परियोजना के अंतर्गत महिला सशक्ति शिक्षा स्वावलंबन एवं रोजगार की प्रेरणा हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से ग्राम की प्रमुख महिलाएं श्रीमती सावित्री यादव, श्रीमती सगुनिया, श्रीमती शांति, श्रीमती गुलाबाई, श्रीमती कैलासिया एवं श्रीमती

मुन्नी मंचासीन रही। इनके साथ विलेज क्लाइमेट रिस्क मैनेजमेंट कमेटी के अध्यक्ष एवं सचिव श्री राम लखन जी एवं श्री नवीन तिवारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित किशोरी बालिकाओं सुश्री अंजलि, राधा, राजरानी ने सरस्वती वंदना के साथ उपस्थित मंच एवं ग्रामवासियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. सतीश पाठक वरिष्ठ शोध अध्येता निकरा परियोजना ने कार्यक्रम की प्रारंभिक रूपरेखा बताते हुए कृषि में महिलाओं के योगदान की विस्तृत व्याख्या की। इसके साथ मंच पर विराजमान सचिव श्री नवीन तिवारी ने मातृशक्ति को प्रणाम करते हुए कृषि के क्षेत्र में महिलाओं की समझ एवं नवीन तकनीकी नवाचार को अपनाकर कृषि से आय वृद्धि करने की कला के बारे में बताया। साथ ही कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़कर नवीन तकनीकी के माध्यम से हम सभी को फायदा हुआ है। उसके पश्चात केंद्र के मौसम वैज्ञानिक डॉ. मनोज शर्मा के द्वारा महिलाओं के समाज में स्थान एवं उनके द्वारा करणीय कार्यों से समाज की उन्नति एवं प्रगति की व्याख्या का उल्लेख करते हुए नवीन पीढ़ी की शिक्षा के साथ कृषिगत शिक्षा की ओर बढ़ने का विचार रखा।

कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. राजेंद्र सिंह नेगी ने मातृशक्ति को आज के कार्यक्रम में अत्यधिक संख्या में सहभाग करने एवं अपनी उपस्थिति दर्ज करने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा नारी ही नारायणी है, इस शब्द की विस्तृत व्याख्या करते हुए कृषि के क्षेत्र में महिलाओं के अथक प्रयास उपज के भंडारण प्रसंस्करण एवं परिवार के भरण पोषण हेतु पूरे वर्ष भर उसे उत्पादन को खाद्य के रूप में परिवर्तित करने की अद्वितीय कला का उल्लेख किया। इस कार्यक्रम में ग्राम में उपस्थित बहन राजरानी, अंजलि, श्रीमती सगुनिया श्रीमती मीना, श्रीमती दुनिया श्रीमती सुनैना ने महिला सशक्तिकरण में महिलाओं की भूमिका एवं बच्चियों की उच्च शिक्षा के मानक स्थापित करने में पूर्ण सहयोग करने के आश्वासन दिए साथ ही सामाजिक ताना-बाना, संस्कार व्यवस्था के साथ समाज के अग्रिम पंक्ति में अपना स्थान सुनिश्चित करने की बात कही।

इस कार्यक्रम के संचालक, कृषि प्रसार वैज्ञानिक डॉ. उत्तम कुमार त्रिपाठी ने कहा "फूल नहीं चिंगारी है यह भारत की नारी है" इन्हीं शब्दों के साथ किसी भी समाज, परिवेश, राज्य, देश की पहचान उसके इतिहास से होती है। इतिहास में किए गए कार्य आपका वर्तमान सुनिश्चित करते हैं। कार्यक्रम के अंत में डॉ. राजेंद्र सिंह नेगी के द्वारा इस कार्यक्रम में साहस का प्रतीक बनी जिन्होंने पूर्ण आत्मविश्वास, साहस का परिचायक छः बहनों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया साथ ही स्वल्पाहार स्वरूप मिष्ठान वितरण एवं गृह वाटिका हेतु सब्जी पौध का वितरण किया गया। कार्यक्रम के अंत में समिति के अध्यक्ष श्री राम लखन के द्वारा महिलाओं को एवं आगंतुकों को आज के इस सफल कार्यक्रम के लिए आभार व्यक्त किया गया। इस कार्यक्रम में ग्राम रामपुरवा, बैहार, डुवहां, पहरा, गुलाबपुरवा टिटिहरा से लगभग 120 महिलाओं एवं पुरुषों ने सहभाग किया।

दीनदयाल शोध संस्थान ने जगद्गुरु तुलसीपीठाधीश्वर स्वामी श्री रामभद्राचार्य को ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित होने पर दी बधाई

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने जगद्गुरु तुलसीपीठाधीश्वर रामानंदाचार्य स्वामी श्री रामभद्राचार्य को ज्ञानपीठ पुरस्कार-2023 से सम्मानित होने पर बधाई दी। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए यह सम्मान स्वामी श्री रामभद्राचार्य को प्रदान किया गया है।

दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन द्वारा अपने कार्यकर्ताओं के साथ कांच मंदिर स्थित स्वामी जी के आश्रम पहुंचकर उनका अभिनंदन करके आशीर्वाद ग्रहण किया। इस अवसर पर डीआरआई के उप महाप्रबंधक डॉ अनिल जायसवाल भी उपस्थित रहे।

श्री महाजन ने कहा कि संस्कृत के प्रकांड विद्वान स्वामी श्री रामभद्राचार्य द्वारा दृष्टिबाधित होने के बावजूद अंतर्मन के आलोक से वेद, उपनिषद एवं रामकथा की जो गूढ़ व्याख्या की गई है, वह भारत ही नहीं, वैश्विक साहित्य जगत के लिए अनुपम आध्यात्मिक धरोहर है। उन्होंने कहा कि भारतीय संत परंपरा के गौरव, श्रद्धेय संत पद्मविभूषित स्वामी श्री रामभद्राचार्य की संस्कृत साधना और तपस्वी जीवन की इस उपलब्धि से भावी पीढ़ियों को प्रेरणा मिलती रहेगी। स्वामी रामभद्राचार्य जी ने श्रेष्ठता के प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। आप अनेक प्रतिभाओं से सम्पन्न हैं तथा आपके योगदान बहुआयामी हैं। आपने शारीरिक दृष्टि से बाधित होने के बावजूद अपनी अंतर्दृष्टि, बल्कि दिव्यदृष्टि से साहित्य और समाज की असाधारण सेवा की है।

सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय में कार्यकर्ता परिवार सम्मेलन

चित्रकूट/दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षणिक प्रकल्प सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय में भी कार्यकर्ता परिवार सम्मेलन का आयोजन किया गया। दीनदयाल शोध संस्थान की योजना के अनुसार समस्त प्रकल्पों में परिवार सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है, आए हुए अतिथियों ने परिवार की भूमिका को रेखांकित किया। वर्षों से परिवार की महत्ता हमारे देश में रही है और परिवार के प्रभाव से समाज की संरचना आज भी जीवंत है।

इस अवसर पर चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय से पधारे समाज कल्याण विभाग के प्राध्यापक श्री अमरजीत सिंह ने अपने विचार व्यक्त किया। परिवार प्रबोधन संयुक्त परिवार और एकल परिवार के संबंध में समाज शिल्पी दंपत्ति प्रभारी श्री राजेंद्र सिंह ने अपने विचार परिवारों के बीच में साझा किया। स्वावलंबन अभियान के प्रभारी डॉ. अशोक कुमार पांडेय ने नाना जी के और दीनदयाल जी के किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि समाज में अंतिम पायदान पर खड़े हुए व्यक्ति का जब तक विकास नहीं होगा तब तक परिवार ग्राम समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्राचार्य श्री मदन तिवारी ने कहा कि सोशल मीडिया के इस युग में परिवार को सुरक्षित रखना, परिवार को सुसंस्कारित रखना है, कुप्रभावों से अपने परिवार को बचाएं और भारत की जो परंपरा रही है उस परंपरा में दादा, नाना, नानी, दादी इनके प्रति सम्मान सहयोग बनाए रखना चाहिए। अंत में कल्याण मंत्र और सहभोज के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर शैक्षणिक अनुसंधान केंद्र के प्रभारी स्री कालिका प्रसाद श्रीवास्तव, प्रधानाचार्य श्री अंशुमान पाठक भी उपस्थित रहे।

राम नवमी पर चित्रकूट गौरव दिवस के उपलक्ष्य में आस्था के दीपों से जगमगा उठी धर्म नगरी

दीनदयाल शोध संस्थान ने किये 1 लाख 1 हजार दीप प्रज्वलित

चित्रकूट धाम/ कौशल्या नंदन श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने वाली उनकी तपोभूमि चित्रकूट उनके अवतरण दिवस पर लाखों दीपों के प्रकाश से जगमगाई। पौराणिक-धार्मिक महात्म्य को अपने आंचल में समेटे रहने वाली धर्मनगरी की छटा दीपों के प्रकाश के बीच अलौकिक नजर आई। गौरव दिवस के अवसर पर संत महात्माओं तथा समाज के सहयोग से पूरे चित्रकूट परिक्षेत्र उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के प्रमुख स्थानों पर एवं प्रमुख संस्थानों, होटल प्रतिष्ठानों, मंदिरों, व्यापारियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित दीप प्रज्ज्वलन में सहभागी सभी लोगों की लक्ष्य बार सूची और निर्धारित स्थान चिन्हित किये गए थे, ताकि कोई भी प्रमुख स्थान बगैर दीप प्रज्ज्वलित के ना रहे।

घाटों पर झिलमिलाते दीपक और मंदाकिनी के जल पर दिखाई पड़ रही उनकी प्रतिकृति देख कर दृश्य ऐसा अद्भुत लगा मानो लाखों तारे मंदाकिनी के जल पर उतर आए हों।

रंग बिरंगी लाइट तथा दीप ज्योति से यह मनोरम साज सज्जा श्रीराम नवमी पर मनाए जाने वाले चित्रकूट गौरव दिवस के उपलक्ष्य में की गई थी। चित्रकूट नगर परिषद, नगर पालिका और स्थानीय संस्थाओं, मठ मंदिरों तथा आम जन सहयोग से किए गए चित्रकूट नगर गौरव दिवस के आयोजन में चित्रकूट के मठ-मन्दिर, घाट, सड़कों और गली - चौबारों को सजाया गया था।

विश्व प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र चित्रकूट में इस बार रामनवमी महोत्सव का भव्य आयोजन श्रद्धालुओं को गदगद कर गया। हालांकि रामनवमी महोत्सव

पिछले कई वर्षों से धर्मनगरी में मनाया जा रहा है। लेकिन इस बार शासन के प्रयासों और संत समाज एवं क्षेत्र के समाजसेवियों के साथ मिलकर श्रद्धालुओं ने इसको ऐतिहासिक रूप दे दिया। धर्म नगरी में जन सहभागिता से इस तरह का यह चौथा आयोजन था, जिसमें समाज की पहल पर सरकार की भी सहभागिता रही, और दोनों राज्यों का प्रशासन पूरी मुस्तैदी से जुटा रहा।

हर खास और आम चित्रकूट गौरव दिवस के उपलक्ष्य में भगवान श्रीराम के नाम दीप प्रज्ज्वलित करने को उत्साहित नजर आ रहा था। कोई दीपों को सजा कर राम नाम लिख रहा था तो कोई किसी तस्वीर को आकार दे रहा था। किसी ने दीप सजाने की जिम्मेदारी ले रखी थी तो कोई दीयों में बाती और तेल का इंतजाम कर रहा था। धर्म नगरी के बस्ती के निवासियों ने भी अपने अपने घरों में दिए जलाए। जिसमें एमपी क्षेत्र में दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने दीप जलाए। बता दें कि श्रीराम नवमी पर चित्रकूट नगर गौरव दिवस मनाए जाने की शुरुआत पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने तीन वर्ष पूर्व कराई थी। पहली बार आयोजित हुए कार्यक्रम में वे स्वयं सपत्नीक शामिल हुए थे।

दीनदयाल शोध संस्थान को 1 लाख 1 हजार दीप प्रज्ज्वलन का लक्ष्य था। डीआरआई के द्वारा सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय गेट व राम दर्शन से लेकर उद्यमिता विद्यापीठ, आरोग्यधाम गेट तक तथा पंचवटी घाट, आरोग्य धाम परिसर, सियाराम कुटीर सहित रामनाथ गोयनका घाट, रामनाथ आश्रमशाला परिसर, बाल्मीकि परिसर मझगवां, तुलसी परिसर गनीवां पर 1 लाख से अधिक दीप प्रज्ज्वलित किये गए, जिसके लिए संस्थान के लगभग 500 कार्यकर्ता अपने पूरे परिवार सहित चिन्हित स्थानों पर शाम 5 बजे से ही तैयारी में जुट गए थे। पूर्व निर्धारित समयानुसार सांय 7 बजे से दीप प्रज्ज्वलित होना शुरू हो गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र में पोषण पखवाड़ा का आयोजन

ग्रामीण महिलाओं को पोषण एवं स्वस्थ आहार के लिए किया गया जागरूक

मझगवां/दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां सतना में 8 से 17 अप्रैल तक पोषण पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम के अन्तर्गत बरुआ, पिंडरा, केलहौरा आदि पंचायतों की महिलाओं ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के खाद्य प्रसंस्करण के वैज्ञानिक डॉ. हेमराज द्विवेदी ने बताया कि पोषण पखवाड़ा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं, किशोरियों और छह साल से कम आयु के बच्चों में पोषण स्तर में सुधार करना है। इस अभियान के माध्यम से समुदाय में पोषण के प्रति जागरूकता बढ़ाते हुए और स्वस्थ आहार एवं जीवनशैली को प्रोत्साहित करने का काम किया जा रहा है और साथ ही महिलाओं को ग्रामीण स्तर पर उपलब्ध संसाधनों के द्वारा अपनी तथा अपने परिवार की संतुलित थाली बनाने के बारे में बताया गया है। साथ ही कैसे हम अपने बच्चों तथा परिवार को स्वस्थ रख सकते है विषय पर विस्तृत जानकारी दी गई।

इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. पंकज शर्मा ने पोषण वाटिका में परंपरागत खाद एवं प्राकृतिक कीट नियंत्रक के बारे में जानकारी दी। मृदा वैज्ञानिक डॉ. अशोक शर्मा ने संतुलित उर्वरकों के प्रयोग एवं मृदा नमूना लेने का प्रायोगिक कराया, साथ ही वर्षा जल संचयन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान केवीके पर लगी सभी प्रदर्शन इकाइयों का भ्रमण भी कराया गया। इस अवसर पर समाज शिल्पी श्री दयाराम यादव सहित 40 महिलायें उपस्थित रही।

दीनदयाल शोध संस्थान एवं नेशनल मेडिको आर्गेनाइजेशन के द्वारा 150 ग्रामीण केन्द्रों में एक साथ चित्रकूट धाम स्वास्थ्य सेवा यात्रा 2.0 का आयोजन

शिविर में विभिन्न मेडिकल कॉलेज से 550 चिकित्सक एवं फैकल्टी मेम्बर 75 टोलियों में गांवों में जाकर दी गई सेवाएं

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान एवं नेशनल मेडिको आर्गेनाइजेशन के द्वारा बाबा साहब अम्बेडकर की 135वीं जयंती पर चित्रकूट के 50 कि.मी. की परिधि में आने वाले 150 केन्द्रों (ग्राम पंचायतों) में 12 से 14 अप्रैल तक चित्रकूट धाम स्वास्थ्य सेवा यात्रा 2.0 का आयोजन किया गया।

शिविर में विभिन्न मेडिकल कालेजों एवं देश के अन्य चिकित्सीय संस्थानों से 100 वरिष्ठ चिकित्सक एवं प्राध्यापक सहित 500 मेडिकल विद्यार्थी स्वास्थ्य जागरुकता एवं उपचार शिविर सम्पन्न कराने हेतु चित्रकूट आए।

शिविर के सामूहिक उद्घाटन सत्र के अवसर पर मध्य प्रदेश के उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि हमारा देश विकसित भारत बनने के लिए तेजी से अग्रसर है। सारी दुनिया में यह मान्यता है कि सर्व कल्याण और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के साथ भारत विश्वगुरू बने। विकसित भारत के लिए हमारे संस्कार और स्वस्थ्य भारत का होना भी जरूरी है।

इस अवसर पर स्वामी विश्वात्मानंद जी, जानकी महल चित्रकूट के सीताशरण जी महाराज, चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलगुरू प्रो. भरत मिश्रा, एनएमओ के डॉ. विवेक चौकसे, डीआरआई के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित, कलेक्टर सतना डॉ. सतीश कुमार एस, जिला अधिकारी चित्रकूट धाम श्री शिवशरण अप्पा, जनपद अध्यक्ष सुश्री रेणुका जायसवाल, श्री बालेन्द्र गौतम, डीन सतना मेडिकल कॉलेज डॉ. एसडी गर्ग, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एलके तिवारी भी उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि भारत अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में तीसरी महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। आर्थिक रूप से सशक्त होने से कुछ बुराईयां भी सामने आती है। इन बुराईयों

को दूर करने में हमारी संस्कृति और संस्कार सहयोगी होंगे। उन्होंने कहा कि केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा चिकित्सा सेवाओं के विस्तार और पैरामेडिकल क्षेत्र में लगातार विकास किया जा रहा है। केन्द्र सरकार ने पूरे देश में 75 हजार मेडिकल की सीटें बढ़ाने का संकल्प लिया है। उन्होंने कहा कि अधोसंरचना बढ़ाने के साथ लोग जागरूक होंगे तो उसका पर्याप्त लाभ भी उठा पायेंगे। स्वास्थ्य के क्षेत्र में शिविर और जांच अभियान चलाने से जागरूकता बढ़ती है। उन्होंने कहा कि पीड़ित मानवता की सेवा करने से सम्मान और मोक्ष सब कुछ मिलता है। तीन दिन के स्वास्थ्य शिविरों में जाने वाले मेडिकल डॉक्टरों को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि हर व्यक्ति की स्क्रीनिंग हो जाये तो बीमारी का आसानी से समय पर पता चल जाता है और उसका समय पर निदान भी संभव है। शिविर के माध्यम से मेडिकल स्टूडेंटों का कौशल और व्यवहारिक ज्ञान भी बढ़ेगा।

कार्यक्रम में विश्वात्मानंद जी महाराज ने अपने आर्शीवचनों में कहा कि जब सृष्टि की रचना हुई तो कष्ट और समस्यायें नहीं बनाई गई थी। संसार में ऐसा कोई कष्ट भी नहीं है जिसे दूर नहीं किया जा सकता है। कष्टों और समस्याओं को चुनौतियों पूर्ण ढंग से स्वीकार कर संकल्प लेकर जुटे तो सभी काम आसान हो जाते है।

उन्होंने कहा कि चिकित्सक के रूप में आप सब ईश्वर की संतान की सेवा कर रहे हैं और इस कार्य के लिए जन्म लेने का सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ है।

इसके पूर्व कार्यक्रम की रूपरेखा में दीनदयाल शोध संस्थान के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र सिंह ने बताया कि बाबा साहब अम्बेडकर की 135वीं जयंती पर दीनदयाल शोध संस्थान और नेशनल मेडीकोज आर्गनाइजेशन के संयुक्त तत्वावधान में चित्रकूट की 50 किमी परिधि के 150 ग्राम पंचायतों में 13 और 14 अप्रैल को एक साथ स्वास्थ्य जागरूकता और उपचार शिविर लगाये जा रहे हैं। इन 150 ग्राम पंचायतों में मध्य प्रदेश की सतना जिले की मझगवां ब्लाक की 58 ग्राम पंचायत और उत्तर प्रदेश क्षेत्र की 92 ग्राम पंचायतें शामिल है। चिकित्सा टीम 13 अप्रैल को प्रातः 8 बजे गांवों में पहुंची और 11 बजे से सायं 4 बजे तक स्वास्थ्य उपचार शिविर का आयोजन कर शाम को ग्राम भ्रमण कर स्वास्थ्य जागरूकता लाने का कार्य हुआ।

राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा ने व्यक्तित्व विकास शिविर का किया अवलोकन

हारमोनियम वादन के साथ शिविरार्थियो का किया उत्साहवर्धन

चित्रकूट / शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि बच्चे जब जीवन क्षेत्र में प्रवेश करने योग्य हों तो उन्हें स्वावलम्बी और सुसंस्कारी विकसित किया जाए। उसकी पूर्व तैयारी न हो तो प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता में पिछड़कर रहना और उपहास, तिरस्कार का भाजन बनना पड़ता है। यह शिक्षा समय रहते न मिले, तो फिर अंधेरे में भटकना और जीवन में ठोकरें खाना ही हाथ रह जाता है। इसलिए दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट के गुरुकुल संकुल में अवकाश के दिनों में ग्रामीण बच्चों के लिए 15 दिन का व्यक्तित्व विकास शिविर सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय के शैक्षणिक परिसर चित्रकूट में लगाया गया था।

इस दौरान राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती विजया रहाटकर द्वारा व्यक्तित्व विकास शिविर का अवलोकन किया गया। उनके द्वारा कालांशो का भी अवलोकन किया गया साथ ही उनके द्वारा हारमोनियम वादन का कार्य किया गया एवं शिविरार्थियों का उत्साहवर्धन किया गया। अपने चित्रकूट प्रवास पर आईं श्रीमती रहाटकर सियाराम कुटीर भी पहुंची वहाँ नानाजी की प्रतिमा पर पुष्पार्चन भी किया। इस दौरान दीनदयाल शोध

संस्थान के उप महाप्रबन्धक डॉ अनिल जायसवाल सहित सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती राजेश्वरी द्विवेदी, श्रीमती दिव्या त्रिपाठी भी उपस्थित रही।

शिविर संयोजक श्री कालिका प्रसाद श्रीवास्तव ने बताया 9 से 15 वर्ष तक के बच्चों के लिए लगाए गए इस शिविर की दिनचर्या प्रातः 4:30 बजे से रात्रि 10:00 बजे तक चलती है जिसमें सामूहिक, शारीरिक, बौद्धिक कार्यक्रमों के साथ 10 विविध कलाओं का व्यावहारिक प्रशिक्षण विषय विशेषज्ञों द्वारा शिविरार्थियों को अलग-अलग समूहों में दिया जा रहा है, जिसमें हारमोनियम, ढोलक, गायन, चित्रकला, गोबर कला, संस्कृत संभाषण, अंग्रेजी संभाषण तथा कंप्यूटर आदि में प्रशिक्षित किया जा रहा है। शारीरिक प्रशिक्षण के अंतर्गत उन्हें इस दौरान पीटी, योगचाप, डंबल, लेजिम, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार आदि कई विद्याओं में पारंगत एवं स्थानीय अंचल एवं दूरदराज के क्षेत्रों से कुशल प्रशिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण प्रतिदिन सुचारू चल रहा है।

शिविराधिकारी श्री के.के. बाजपेयी ने कहा कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा विगत 25 वर्षों से प्रतिवर्ष आयोजित हो रहे व्यक्तित्व विकास शिविरों के माध्यम से ग्रामीण अंचल के बालक-बालिकाओं में मानवीय, सामाजिक और वैज्ञानिक गुण विकसित कर उनकी प्रतिभाओं को निखारने का सराहनीय काम किया जा रहा है। 15 दिनों तक चलने वाले इस शिविर में विभिन्न जीवनोपयोगी विषयों पर अलग-अलग विशेषज्ञ शिविरार्थियों का मार्गदर्शन कर रहे है। शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र के विद्वान शिविरार्थियों के उत्साहवर्धन हेतु आ रहे हैं। विभिन्न शारीरिक और बौद्धिक प्रतियोगितायें भी शिविर के दौरान प्रस्तावित हैं। महात्मा गाँधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ अमरजीत सिंह द्वारा हमारा समाज और नागरिक कर्तव्यों का पालन विषय पर बौद्धिक हुआ वहीं गायत्री शक्तिपीठ के डॉ रामनारायण त्रिपाठी द्वारा चित्रकूट के पौराणिक महत्वों से शिविरार्थियों का मार्गदर्शन किया गया। राष्ट्रऋषि नानाजी जी कहते थे कि सभी बच्चे देश के भावी नागरिक हैं इसलिये उन्हें आदर्श रूप में तैयार करने से ही देश का विकास सम्भव है। व्यक्तिव विकास में ऐसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं जो किसी व्यक्ति की क्षमता को विकसित करती हैं, मानव पूंजी का निर्माण करती हैं, जीवन की गुणवत्ता बढ़ाती हैं और सपनों और आकांक्षाओं को साकार करने की सुविधा प्रदान करती हैं।

आरोग्यधाम में कटे-फटें होंठ, तालू एवं बर्न केसों की हुई निःशुल्क प्लास्टिक सर्जरी

इंदौर एवं रायपुर के वरिष्ठ प्लास्टिक सर्जन ने मरीजों को प्रदान की अपनी सेवाएं

चित्रकूट/ कटे-फटे होंठ, तालू एवं हाइपोस्पेडिया की सर्जरी की सुविधा के साथ दीनदयाल शोथ संस्थान के आरोग्यधाम परिसर में दन्त चिकित्सा इकाई द्वारा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें कटे-फटें होंठ, तालू, हाइपोस्पेडिया एवं बर्न केसों की प्लास्टिक सर्जरी की गई। जिन मरीजों का पंजीयन हुआ उन सभी का परामर्श के बाद शिविर में निशुल्क सर्जरी की गई।

दीनदयाल शोध संस्थान की अपील पर उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के आसपास के 9 जिलों के 90 ग्रामीणों ने पीड़ित बच्चों एवं युवाओं का परामर्श व उपचार के लिए आरोग्यधाम में पंजीयन कराया।

आरोग्यधाम दंत चिकित्सा विभाग के प्रभारी डॉ वरुण गुप्ता ने बताया कि आरोग्यधाम के दन्त चिकित्सा विभाग द्वारा रायपुर के डॉ एम एल जैन एवं इंदौर के डॉ. प्रकाश छजलानी व उनकी टीम के सहयोग से इस वर्ष भी 20 से 28 अप्रैल तक विशाल प्लास्टिक सर्जरी शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में कटे-फटें होंठ, तालू, बर्न एवं हाइपोस्पेडिया के मरीजों की प्लास्टिक सर्जरी वरिष्ठ प्लास्टिक सर्जनों एवं उनकी टीम के द्वारा की गई। मरीजों के लिए पंजीयन से लेकर संपूर्ण उपचार एवं डिस्चार्ज तक सारी व्यवस्थाएं पूर्णतः निशुल्क प्रदान की गई।

शिविर में गरीब परिवारों के लिए होने वाली प्लास्टिक सर्जरी जीवन बदलने वाली साबित होती है और उन्हें बिना किसी भेदभाव व संकोच के सामान्य समाज में एकीकृत होने का अवसर देती है।

डॉ. नरेश शर्मा वरिष्ठ सर्जन एवं निदेशक दन्त चिकित्सा तथा उपाध्यक्ष दीनदयाल शोध संस्थान ने बताया कि

जन्मजात दोषों, चोटों या बीमारियों के कारण कटे फटे क्षतिग्रस्त त्वचा को ठीक करने का कार्य किया जा रहा है जिससे शरीर के अंगों के कार्यप्रणाली को पुनः ठीक करके उसे बहाल किया जा सके और मरीज के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करके उसके आत्मविश्वास को बढ़ाया जा सके इससे उसके आत्म सम्मान में भी वृद्धि होगी। इस वर्ष ट्रामा, बर्न एवं हाइपोस्पेडिया के अतिरिक्त अन्य मरीजों को भी चिकित्सा उपलब्ध कराई गई।

हाइपोस्पेडिया के अंतर्गत विहरवाँ राजापुर चित्रकूट के अनुज पाल (उम्र 7 वर्ष) को चिकित्सा उपलब्ध कराई गई है। अनुज की दादी लीलावती पाल ने बताया कि बच्चे को जन्मजात यह समस्या थी जिसका ऑपरेशन लखनऊ में कराया गया था और लगभग 80 हजार खर्च भी हो गया परन्तु कोई लाभ नहीं मिला और दुबारा लगभग इतना ही और खर्चा लगना था लेकिन शिविर की जानकारी होने पर यहाँ पंजीयन कराया है और बच्चे का इलाज बेहतर ढंग से

किया जा रहा है और किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया गया हम गरीबों के लिए यह वरदान से कम नहीं है। वहीं डूडा पुरवा बदौसा निवासी श्रीमती शिवकुमारी पत्नी श्री राममूरत यादव नें बताया कि उनकी बेटी प्रीति (उम्र 11 वर्ष) का सिर थ्रेसर में फंस गया था जिससे सिर के सारे के सारे बाल निकल गए और उसका ऑपरेशन लखनऊ में कराया गया जिस पर कर्ज लेकर लगभग 2 लाख रुपये खर्च भी किया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ और लगभग इतना ही खर्च पुनः सर्जरी पर लगना था परंतु यहां पर शिविर की जानकारी होने पर पंजीयन कराया और निःशुल्क सर्जरी की गई है संस्थान की ऐसी व्यवस्था हम गरीबों के लिए भगवान का प्रसाद है।

बच्चों ने व्यक्तित्व विकास शिविर में किया विविध कलाओं का प्रदर्शन

शिविर में 126 ग्राम आबादियों के 222 बच्चों का हुआ एक साथ प्रदर्शन

भारत की प्रकृति, संस्कृति एवं गौरव की रक्षा हेतु बच्चों ने प्रस्तुत किये कार्यक्रम

विभिन्न स्तरों के बच्चों ने एक साथ रहकर व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों को हंसते–खेलते सहजता और सरलता से सीखा समझा

चित्रकूट/ दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा विगत 25 साल से चित्रकूट में प्रतिवर्ष आयोजित हो रहे व्यक्तित्व विकास शिविरों के माध्यम से ग्रामीण अंचल के बालक-बालिकाओं में मानवीय, सामाजिक और वैज्ञानिक गुण विकसित कर उनकी प्रतिभाओं को निखारने का सराहनीय काम किया जा रहा है। बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने की दृष्टि से गुरूकुल संकुल में दिनांक 18 अप्रैल से 3 मई 2025 तक व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के 9 जिलों एवं चित्रकूट की 50 कि0मी0 परिधि के 126 ग्राम पंचायतों से 222 बालक-बालिकाओं ने शिविर में सम्मिलित होकर संगीत (गायन-वादन-नृत्य), डम्बल, लेजिम, चित्रकला, कम्प्यूटर, घोष, मेंहदी, रंगोली आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर का समापन दीक्षांत समारोह एवं दीनदयाल परिसर में बच्चों की कलाओं के प्रदर्शन के साथ हुआ। शिविर का उद्घाटन 18 अप्रैल को हुआ था, जिसमें कक्षा 5 से लेकर 9 तक के 10 से 15 वर्ष की आयु के बच्चे सहभागी रहे।

शिविर का समापन कार्यक्रम में महंत रामजी दास सन्तोषी अखाड़ा, महंत दिव्यजीवन दास जी महाराज दिगम्बर अनी अखाड़ा, महामंडलेश्वर रामनरेश दास जी, डॉ. भरत मिश्रा कुलगुरु महात्मा गाँधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, श्री अशोक जाटव अध्यक्ष जिला पंचायत चित्रकूट, पंकज अग्रवाल अध्यक्ष कोऑपरेटिव बैंक बाँदा- चित्रकूट, सुश्री साधना पटेल अध्यक्ष नगर पंचायत चित्रकूट, श्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय पूर्व राज्य मंत्री उ.प्र. शासन ने दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

शिविराधिकारी श्री के.के. बाजपेयी द्वारा शिविर आख्या का वाचन किया गया। जिसमें उन्होंने बताया कि ग्रामीण बालक बालिकाओं के समग्र व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले व्यक्तित्व विकास शिविरों की शुरुआत भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी के मार्गदर्शन में वर्ष 2001 में हुई। चित्रकूट क्षेत्र में नई पीढ़ी को गढ़ने का यह 25वॉं अभिनव आयोजन है। इन शिविरों का प्रभाव देखने को भी मिल रहा है कि आज गॉव - गॉव में प्रशिक्षण देने और ग्राम स्तर पर बाल शिविरों को आयोजित करने के लिये अच्छी संख्या में ग्रामीण बालक बालिका तैयार हो रहे है। इस वर्ष शिविर में 130 बालक व 92 बालिकाएं कुल 222 बालक-बालिकायें 126 आबादियों से यहॉं पहुँचे है, जिन्हें 10 गणों में विभाजित किया गया।

इस अवसर पर सन्तोषी अखाड़ा के महंत राम जी दास ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि कोई भी देश अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं संस्कारों को खोकर महान नहीं बन सकता है,

हमारी संस्कृति में हम प्रत्येक बालिका में देवी और बालक में राम को देखते हैं नदियों को माता के रूप में पूजते हैं। किसी भी देश का निर्माण केवल पत्थर एवं मिट्टी से नहीं होता बल्कि उसमें रहने वाले जनमानस के समर्पण की भावना से होता है। विभिन्न ग्राम आबादियों से इस पन्द्रह दिवसीय व्यक्तित्व विकास शिविर में आप सबने जो सीखा है उसे अपने जीवन में उतार कर अन्य कम से कम अपने जैसे 5 लोगों को गुणी बनाएंगे तभी शिविर की सच्ची सफलता होगी क्योंकि यदि एक एक दीप भी सभी मिलकर प्रज्ज्वलित करेंगे तभी अंधकार मिट पायेगा।

जिला पंचायत चित्रकूट के अध्यक्ष श्री अशोक जाटव ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम बच्चों को ध्येय एवं कर्तव्यनिष्ठ बनाते हैं। देश एवं समाज में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो यह कहते हैं कि संघ क्या करता है तो उन्हें आज यहाँ आकर देखना चाहिए कि संघ क्या करता है और क्या सिखाता है। ऐसे शिविर बच्चों में त्याग, समर्पण, संस्कार, अनुशासन एवं कर्मपथ पर चलना सिखाते है। उन्हें राष्ट्र निर्माण का वाहक बनाते हैं अर्थात समर्पण की भावना ही सर्वश्रेष्ठ है इसका निर्माण करते हैं जिससे उनमें वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को जागृत कर समाज एवं राष्ट्रनिर्माण में संलग्न करना है।

शिविर में विभिन्न ग्रामों, नगरों और विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तरों के बालक बालिकाओं ने एक साथ रहकर सह जीवन का अभ्यास किया। शिविरार्थियों ने व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों को हंसते खेलते सहजता और सरलता से सीखा और समझा है। प्रातः प्रार्थना के कालांश में एकात्मता स्त्रोत में वर्णित नदियों, पहाड़ों, धार्मिक स्थलों एवं महापुरुषों, वैज्ञानिकों के बारे में बताया गया। शिविर में शारीरिक एवं बौद्धिक कार्यक्रमों के साथ-साथ अलग-अलग प्रकार के 9 विषयों पर व्यवहारिक प्रशिक्षण शिविरार्थियों ने अलग-अलग समूहों में रहकर प्राप्त किया। शिविर में गतिविधियों के अंतर्गत संगीत (ढ़ोलक, तबला, हारमोनियम) नृत्य, मेंहदी, चित्रकला, घोष, कम्प्यूटर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के प्रातः कालीन विचार कणिका व बौद्धिक सत्र में स्वामी विवेकानन्द, पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर, सरदार वल्लभ भाई पटेल, सुभाषचन्द्र बोस, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी महाराज, वीरांगना दुर्गावती, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम व महर्षि बाल्मीकि, गोस्वामी तुलसीदास जी, पं. दीनदयाल उपाध्याय, भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी एवं बौद्धिक विषयों में शिविर की आवश्यकता एवं महत्व, हमारा समाज एवं नागरिक कर्तव्य, चित्रकूट का पौराणिक महत्व, पर्यावरण का जीवन में महत्व, छात्र जीवन एवं अनुशासन, पोषण एवं स्वास्थ्य, आयुर्वेदिक औषधियों का जीवन में महत्व, वर्तमान समय में राष्ट्र के समक्ष आ रहे संकट में स्वयं की भूमिका, सनातन सभ्यता का परिचय एवं सेवा कार्य का महत्व आदि विषयों में विशेषज्ञों द्वारा ज्ञानवर्धन कराया गया। शारीरिक प्रशिक्षण में डम्बल, योगचाप, व्यायाम योग, दण्ड योग, नियुद्ध, घोष का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में मनोरंजन सत्र में बालक बालिकाओं की उत्साहपूर्ण सहभागिता देखने को मिली। शिविर के दौरान गण गीत व कक्ष

सज्जा जैसी विभिन्न प्रतियोगितायें सम्पन्न करायी गयी साथ ही शिविरार्थी छात्र/छात्राओं को कामदगिरि परिक्रमा, रामदर्शन एवं दीनदयाल शोध संस्थान के प्रकल्पों का भ्रमण कराया गया। शिविरार्थियों द्वारा शिविर में दिये गये प्रशिक्षणों का प्रदर्शन किया गया।

शारीरिक प्रदर्शनों से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। अलग-अलग समूहों में शारीरिक प्रशिक्षक श्री राधेश्याम बाघमारे के नेतृत्व में लेजिम, योगासन, डम्बल, पिरामिड की आकर्षक प्रस्तुतियों ने सभी को प्रभावित किया। गीत की धुन पर योगचाप का प्रदर्शन तथा विद्या, आयु, प्रज्ञा, या, बल की वृद्धि के लिये सामूहिक सूर्य नमस्कार के साथ ताल से ताल, कदम से कदम, स्वर से स्वर मिलाकर सभी बच्चों ने डम्बल का प्रदर्शन किया।

मंचीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सर्वप्रथम गणेश वंदना की प्रस्तुति हुई। समापन समारोह के भव्य मंच से सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भारत की विविधताओं वाली एकात्म संस्कृति का दर्शन उपस्थित जनसमुदाय ने किया। इन सभी के बीच तबला, हारमोनियम एवं ढोलक वादन की प्रस्तुतियां अनोखे ढंग से हुई। भारत की प्रकृति, संस्कृति एवं गौरव की रक्षा हेतु विभिन्न गीत भी बच्चों द्वारा प्रस्तुत किये गये। समापन अवसर पर शिविर के प्रशिक्षकों को अतिथियों द्वारा सम्मानित भी किया गया। मेंहदी, रंगोली एवं चित्रकला प्रशिक्षण के अन्तर्गत शिविरार्थी बच्चों द्वारा तैयार की गई सामग्री की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

समापन के उपरांत दीक्षांत सत्र में शिविरार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। इस सत्र में शिविरार्थियों ने अच्छा नागरिक बनने के लिये 6 सूत्रीय शपथ ली। इस दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि आप अपने अंदर विद्यमान क्षमताओं का आकलन कर अपने अंदर आत्मविश्वास जागृत करिए और नेतृत्व की क्षमता का विकास करिए। आप सभी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर बने, उन्नति के शिखर पर पहुंचें ऐसी आप सभी के लिए शुभकामनाएं एवं आप सबके द्वारा प्रस्तुत की गई शानदार प्रस्तुतियों के लिए बहुत-बहुत बधाई।

कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन शिविर संयोजक श्री कालिका प्रसाद श्रीवास्तव ने किया तो वहीं कार्यक्रम का सफल संचालन श्री प्रकाश प्रजापति ने किया। इस दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित, समाजसेवी श्री वी.के. सिंह, महंत श्री भास्कर दास, श्री सोमेश जी डिप्टी कलेक्टर सतना, श्रीमती विनीता शिवहरे, श्री गिरीश अग्रवाल, श्री प्रबल राव श्रीवास्तव, श्री अनिल जायसवाल उप महाप्रबंधक दीनदयाल शोध संस्थान एवं विभिन्न प्रकल्पों के प्रकल्प प्रमुख, कार्यकर्ता, नगर के गणमान्य नागरिक व मातृशक्ति उपस्थित रही।

राष्ट्रीय तकनीकी दिवस पर केवीके में वर्षा जल संचयन पर कार्यशाला, 94 जलदूत एवं कृषकों की रही सहभागिता

जन सहभागिता से माँ मंदाकिनी नदी का पुनर्जीवन हेतु वक्ताओं ने रखे विचार

मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंन्द्र, मझगवाँ में राष्ट्रीय तकनीकी दिवस 11 मई 2025 के अवसर पर वर्षा जल संचयन से मंदाकिनी नदी का पुनर्जीवन विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री अभय महाजन संगठन सचिव दीनदयाल शोध संस्थान ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी एवं राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख के चित्रों पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रोफेसर भरत मिश्रा कुलगुरु महात्मा गंधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, विशिष्ट अतिथि सुश्री संजना जैन, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सतना, श्री प्रवीण पाठक सम्भागीय समन्वयक मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद, रीवा, डॉ. राजेश तिवारी, जिला समन्वयक मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद, सतना, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. नवीन कुमार शर्मा कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवॉं ने अतिथि के रूप में सहभागिता की।

सर्वप्रथम वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. नवीन कुमार शर्मा, कृषि विज्ञान केन्द्र, मझगवां ने कार्यक्रम की विस्तृत रुपरेखा मृदा जल संचयन एवं संरक्षण पर जानकारी दी। डॉ. राजेश तिवारी, जिला समन्वयक, मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद, सतना ने वर्षा जल संचयन से मंदाकिनी नदी का पुनर्जीवन पर जानकारी दी। तदुपरान्त डॉ. अखिलेश कुमार जागरे ने केन्द्र पर वर्षा जल संचयन एवं संरक्षण पर हुए कार्यों की विस्तृत जानकारी पॉवर प्वाइंट के माध्यम से सभी के साथ साझा किया।

श्री प्रवीण पाठक, सम्भागीय समन्वयक मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद, रीवा ने माँ मंदाकिनी नदी का पुनर्जीवन कैसे सम्भव है उसके बारे में विस्तार से जानकारी एवं दिनांक 11 मई से 18 मई 2025 तक का कार्यक्रम/ अभियान के बारे में चर्चा की साथ ही माँ मंदाकिनी की अविरल स्वच्छ जल धारा प्रवाहित होती रहे इसकी कई विद्याओं से अवगत कराया।

कृषक श्री अनूप सिंह, अमरपाटन ने बताया कि ग्रामीणों के जन सहयोग से नाली बना कर तालाब में पानी भरना एवं नदी में बोरी बंधान बना कर भूमि गत जल स्तर को बढ़ाने का कार्य किया जिससे गॉव का जल स्तर बढ़ गया और दो फसल लेने लगे। महिला कृषक कमलेश कुमारी गौतम, बरौंधा ने पानी का कैसे सदुपयोग किया जाए इस संदर्भ में 16 पंचायतों में जन जागरुकता अभियान चला कर ग्रामीणों को जागरुक किया जा रहा है।

सुश्री संजना जैन, मुख्य

कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत सतना ने खेत का पानी खेत में, गॉव का पानी गॉव में कैसे रहे इसकी जानकारी के साथ शासन की योजनाओं की जानकारी दी साथ ही आह्वान किया कि जिले के किसान बन्धु वर्षा जल के संचय हेतु खेत पर तालाब निर्माण, नलकूप एवं हैण्डपम्प रिचार्जिंग करा सकते है जिस पर आप की सहमति चाहिए शासन पूर्ण रुप से आपका सहयोग करेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री अभय महाजन, संगठन सचिव, दीनदयाल शोध संस्थान ने कहा कि जन भागीदारी के आधार पर किया गया कार्य अटल एवं दीर्घकालिक होता है। राष्ट्रऋषि नानाजी ने कहा था कि ग्रामीण जन के सहयोग से ही ग्राम का विकास सम्भव है उसी को आधार मानते हुए आज भी संस्थान कार्य कर रहा है वर्षा जल का मिलन भूमिगत जल से कराना आज आवश्यक है तभी वर्षा जल संचयन परिलक्षित होगा और प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग कर ही हम संसाधनों को संरक्षित कर सकते हैं।

कार्यक्रम में 94 जलदूत एवं कृषकों की सहभागिता रही। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के प्रसार वैज्ञानिक श्री पंकज शर्मा ने किया साथ ही कृषि विज्ञान केंद्र के सभी कार्यकर्ताओं का पूर्ण सहयोग रहा।

सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय का परीक्षा परिणाम रहा अव्वल

बारहवीं में कृषि संकाय के छात्र सुधीर कुमार 94.6 एवं हाईस्कूल में श्रद्धा प्रजापति 96.6 प्रतिशत अंक के साथ रहे मेधावी

चित्रकूट/ माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्य प्रदेश का हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी का परीक्षा परिणाम घोषित हो चुका है। दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय का बोर्ड परीक्षा परिणाम उत्साहजनक रहा। हायर सेकेंडरी परीक्षा में दर्ज कल 155 परीक्षार्थियों में से 113 परीक्षार्थियों ने प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण की। कृषि संकाय के छात्र सुधीर कुमार ने 94.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर पहला स्थान प्राप्त किया। वाणिज्य संकाय की छात्रा हिमांशी सिंह 92.6% तथा कला संकाय में मेधा तिवारी ने 92% एवं विज्ञान संकाय में प्रतीक गुप्ता ने 91% अंक प्राप्त किया। हाईस्कूल में श्रद्धा प्रजापति ने 96.6 प्रतिशत, अनंत सिंह ने 94.6 प्रतिशत और दीक्षा सिंह 93 प्रतिशत अंक प्राप्त कर मेधावी छात्र के रूप में विद्यालय को क्षेत्र में गौरवान्वित किया। जहां मध्य प्रदेश में 10वीं एवं 12वीं का परीक्षा परिणाम क्रमशः 76.5% तथा 74.5% रहा, वहीं सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहा।

'भारत रत्न' राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय का परीक्षा परिणाम हर वर्ष क्षेत्र में अव्वल रहता है। विद्यालय के प्राचार्य श्री मदन तिवारी ने बताया कि गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी विद्यालय का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहा। शैक्षणिक अनुसंधान केंद्र के प्रभारी कालिका प्रसाद श्रीवास्तव ने उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त करने वाले छात्रों को शुभकामनाएं दी हैं।

दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने विद्यालय की इस सफलता पर मेधावी छात्रों तथा उनके अभिभावकों को बधाई दी तथा विद्यालय के शिक्षकों को भी बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि श्रद्धेय नाना जी की परिकल्पना प्रत्येक क्षेत्र में चित्रकूट में साकार रूप ले रही है। समस्त शिक्षक शिक्षिकाओं ने सफल छात्रों को शुभकामनाएं प्रेषित की है, उन अभिभावकों का भी धन्यवाद किया गया जिन्होंने अपने बच्चों के परीक्षा परिणाम में अत्यधिक सहयोग किया।

राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन (NICRA): ग्रामोदय से राष्ट्रोदय की मजबूत कड़ी

परिचय:

जलवायु परिवर्तन आज विश्व के सबसे जटिल एवं गंभीर चुनौतियों में से एक बन चुका है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव कृषि क्षेत्र पर पड़ता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में छोटे और राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन (NICRA) सीमांत किसानों को बदलते मौसम के खतरों से सुरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य को लेकर क्रीडा हैदराबाद 'राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन (NICRA)' परियोजना का संचालन किया जा रहा है, ताकि किसानों की आजीविका सुरक्षित रहे और वे आपदाओं के बीच भी आत्मनिर्भर बनें। भारत रत्न श्रद्धेय नानाजी देशमुख के 'ग्रामोदय से राष्ट्रोदय' के स्वप्न को साकार करते हुए दीनदयाल शोध संस्थान के लाल बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोपालग्राम, गोंडा (उत्तर प्रदेश) ने वर्ष 2024-25 में जलवायु जोखिम से जूझ रहे किसानों के लिए कई नवाचारी कार्य किए हैं। विशेष रूप से नारायणपुर साल, बमबमपुरवा, राजापुर जो अक्सर बाढ़ से प्रभावित रहते हैं, NICRA परियोजना के अंतर्गत चयनित किए गए हैं। ये गाँव हर साल बाढ़ और अत्यधिक वर्षा के कारण कृषि में भारी नुकसान झेलते हैं। ऐसे संवेदनशील गाँवों में कृषि विज्ञान केंद्र ने प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, उन्नत फसल उत्पादन तकनीक, पशुपालन, पशु स्वास्थ्य, पोषण वाटिका, ग्राम आपदा प्रबंधन समिति तथा कृषि यंत्रों के सामूहिक उपयोग जैसी गतिविधियाँ संचालित कर किसानों को सुरक्षा एवं नई उम्मीद दी है। केंद्र द्वारा स्थापित कस्टम हायरिंग सेंटर, मौसम पूर्वानुमान प्रणाली, उन्नत बीज उपलब्धता और जोखिम प्रबंधन के उपायों ने बाढ़ ग्रस्त इलाकों में किसानों की रक्षा-ढाल का काम किया है। इन प्रयासों से किसानों की लागत घटी, उत्पादन बढ़ा और प्राकृतिक आपदाओं से होने वाला नुकसान कम हुआ। भारत रत्न श्रद्धेय नानाजी देशमुख जी के ग्रामोदय दर्शन से प्रेरित यह कार्य योजना किसानों को आत्मनिर्भर बनाने और गाँवों को सशक्त करने की दिशा में एक सशक्त पहल है। इस प्रकार

कृषि विज्ञान केंद्र के प्रत्येक किसान के साथ खड़ा होकर जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और ग्रामीण भारत को सतत विकास की ओर अग्रसर कर रहा है।

NICRA ग्राम एवं आसपास के गांवों की स्थिति :

राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन (NICRA) परियोजना के अंतर्गत चयनित गांवों तथा उनके आसपास के क्षेत्र में वर्ष 2024-25 के दौरान मौसम की स्थिति अपेक्षाकृत असंतुलित रही। जहाँ सामान्य औसत वर्षा लगभग 1152 मिमी होती है, वहीं इस वर्ष कुल वर्षा केवल 715 मिमी ही रिकॉर्ड की गई। विशेष रूप से नारायणपुर साल, बमबमपुरवा और राजापुर जैसे गाँव, जो अक्सर बाढ़ से प्रभावित रहते हैं, NICRA परियोजना के अंतर्गत चयनित किए गए हैं। इन गाँवों में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के अंतर्गत मृदा संरक्षण, वर्षा जल संग्रहण, खेतों में जल निकासी व्यवस्था को दुरुस्त करने जैसे उपाय किए गए। किसानों हेतु उन्नत किस्म के बीज, मौसम पूर्वानुमान जानकारी और फसल प्रबंधन की नई तकनीकों से जोड़कर उन्हें बदलते मौसम के प्रति सजग किया जा रहा है । कस्टम हायरिंग सेंटर के माध्यम से महंगे कृषि यंत्रों को सामूहिक उपयोग में लाया गया, जिससे छोटे और सीमांत किसानों को खेती में अधिक लाभ मिला। इन प्रयासों के माध्यम से मान्यवर नानाजी देशमुख के ग्रामोदय दर्शन को मूर्त रूप देते हुए कृषि विज्ञान केंद्र ने गाँवों को जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने में समर्थ बना रहा है। आज ये गाँव आसपास के क्षेत्रों के लिए एक प्रेरक उदाहरण बन रहे हैं, कि कैसे सामूहिक प्रयास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कठिन परिस्थितियों में भी विकास संभव है।

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं प्रदर्शन (केंचुआ खाद उत्पादन एवं फसल अवशेष प्रबंधन) :

NICRA परियोजना के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में वर्षभर कई महत्वपूर्ण प्रदर्शन एवं क्रियाकलाप सफलतापूर्वक संचालित किए गए। खासतौर पर गेहूँ की खेती में 'ज़ीरो टिलेज सीड ड्रिल मशीन' के माध्यम से बुवाई का प्रदर्शन किया गया। इस विधि से किसानों को खेत पर ही दिखाया गया कि बिना जुताई के सीधे बीज बोने से मिट्टी की नमी सुरक्षित रहती है, जुताई पर आने वाला खर्च बचता है और समय एवं श्रम दोनों की बचत होती है।

पोषण वाटिका: पोषण सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण और स्वावलंबन की दिशा में ठोस पहल

राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन (NICRA) परियोजना के अंतर्गत पोषण वाटिका (न्यूट्रीशनल किचन गार्डनिंग) की संकल्पना को ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष प्राथमिकता दी गई है। महिलाओं और किसान परिवारों को मौसमी सब्ज़ियाँ, हरी पत्तेदार सब्ज़ियाँ, टमाटर, भिंडी, हरी मिर्च, लौकी, पालक जैसी पोषणयुक्त सब्ज़ियाँ उगाने के लिए प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा औषधीय पौधे जैसे तुलसी, एलोवेरा, अदरक आदि उगाने की जानकारी भी दी गई।

पशुपालन: स्वास्थ्य प्रबंधन, चारा उत्पादन और नवाचार की ओर कदम

इस परियोजना में स्वास्थ्य शिविरों ने पशुपालकों को नियमित टीकाकरण, साफ-सफाई और पोषण प्रबंधन के महत्व को समझाया। पशुओं के पोषण को बेहतर बनाने के लिए किसानों को खनिज मिश्रण का प्रदर्शन नदिया गया ताकि पशुओं को संतुलित आहार मिल सके, उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार हो और दूध उत्पादन बढ़े । इसके साथ ही किसानों को पशुओं के लिए विशेष पोषणयुक्त पशु चॉकलेट बनाने एवं खिलाने का प्रशिक्षण दिया। इसके अतिरिक्त वर्ष भर हरे चारे की उपलब्धता को दूर करने के लिए लाल नेपियर घास का प्रदर्शन किया गया। लाल नेपियर घास एक अत्यंत पौष्टिक और जल्दी बढ़ने वाला हरा चारा है, जो वर्षभर पशुओं को पर्याप्त हरा चारा उपलब्ध कराने में सहायक है।

कस्टम हायरिंग सेंटर: संसाधनों का साझा उपयोग, लागत में बचत और उत्पादन में वृद्धि

NICRA परियोजना के अंतर्गत दीनदयाल शोध संस्थान लाल बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोपालग्राम, गोंडा ने किसानों को आधुनिक कृषि यंत्रों की सुविधा सामूहिक स्तर पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कस्टम हायरिंग सेंटर (Custom Hiring Centre) का सफलतापूर्वक संचालन किया है।

ग्राम जलवायु जोखिम प्रबंधन समिति: आपदा प्रबंधन में समुदाय की सक्रिय भागीदारी

जलवायु परिवर्तन के कारण बार-बार आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे अचानक बाढ़, अतिवृष्टि या असमय बारिश, किसानों के लिए बड़ी चुनौती बन गई हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए दीनदयाल शोध संस्थान के लाल बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोपालग्राम, गोंडा ने ग्राम जलवायु जोखिम प्रबंधन समिति (Village Climate Risk Management Committee-VCRMC) का गठन किया है। यह समिति गाँव स्तर पर आपदा प्रबंधन एवं जोखिम आकलन की ठोस योजना बनाती है।

मानव संसाधन विकास एवं प्रसार गतिविधियाँ: ज्ञान, अनुभव और आत्मनिर्भरता की दिशा में पहल

किसानों को बदलते मौसम, नई तकनीक और बाज़ार की चुनौतियों के अनुरूप सक्षम बनाना आज के कृषि क्षेत्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दीनदयाल शोध संस्थान के लाल बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोपालग्राम, गोंडा ने NICRA परियोजना के अंतर्गत मानव संसाधन विकास एवं प्रसार गतिविधियों को विशेष प्राथमिकता दी है। केंद्र ने वर्षभर गाँवों में किसानों और ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगारपरक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिनमें आधुनिक खेती की तकनीक, कृषि यंत्रों का सुरक्षित एवं दक्षतापूर्ण उपयोग, पशुपालन, सब्ज़ी उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण, पोषण वाटिका प्रबंधन जैसे विषयों को शामिल किया गया।

ज्ञानवर्धक एक्सपोज़र विज़िट: सीखने, देखने और अपनाने का अवसर

किसानों और ग्रामीण युवाओं को सिर्फ प्रशिक्षण देना ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि उन्हें सफल मॉडल और व्यवहारिक उदाहरण भी दिखाना आवश्यक होता है, ताकि वे नई

तकनीकों को अपनी खेती और आजीविका में आत्मविश्वास से लागू कर सकें। इसी उद्देश्य से दीनदयाल शोध संस्थान लाल बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोपालग्राम, गोंडा ने समय-समय पर किसानों के लिए एक्सपोज़र विज़िट का आयोजन किया।

निष्कर्ष :

दीनदयाल शोध संस्थान लाल बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोंडा, राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन (NICRA) परियोजना के माध्यम से लगातार यह सुनिश्चित कर रहा है कि बदलते जलवायु परिदृश्य में किसानों को सुरक्षित, सशक्त और आत्मनिर्भर बनाया जा सके। केंद्र की यह पहल केवल जलवायु परिवर्तन के जोखिमों को कम करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह किसानों की आय बढ़ाने, कृषि उत्पादन में निरंतरता लाने और खेती को टिकाऊ बनाने की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है। केंद्र द्वारा किसानों के लिए उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, पोषण वाटिका, पशुपालन में नवाचार, कस्टम हायरिंग सेंटर की स्थापना, ग्राम जलवायु जोखिम प्रबंधन समिति का गठन, समय-समय पर प्रशिक्षण, एक्सपोज़र विज़िट और सामाजिक समावेशन जैसे अनेक प्रयास किए गए हैं। इन सभी पहलों ने गाँवों में केवल खेती की पद्धति ही नहीं बदली, बल्कि किसानों के सोचने और काम करने के तरीके को भी नया आयाम दिया है। श्रद्धेय नानाजी देशमुख जी ने जो 'ग्रामोदय से राष्ट्रोदय' का स्वप्न देखा था, उसे यह केंद्र जीवंत कर रहा है — जहाँ गाँवों में तकनीक, ज्ञान और सामूहिक शक्ति के समन्वय से विकास के रास्ते खुल रहे हैं। इस अभियान में केवल किसान ही नहीं, बल्कि महिलाएँ, युवा, वंचित वर्ग और सम्पूर्ण ग्रामीण समाज सक्रिय रूप से भागीदार बनकर लाभान्वित हो रहा है। आज इन प्रयासों का प्रत्यक्ष परिणाम यह है कि बाढ़ प्रभावित और जलवायु संवेदनशील क्षेत्र के गाँव भी अब नई उम्मीद और आत्मविश्वास के साथ कृषि और ग्रामीण विकास की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। आने वाले समय में यह केंद्र निस्संदेह ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर और सतत विकास की राह पर अग्रसर करने में अपनी भूमिका और अधिक सशक्त रूप से निभाता रहेगा।

डिजिटल विपणन हब : ग्रामीण महिला किसानों के उत्पादों को नया बाज़ार

अंबाजोगाई, बीड (महाराष्ट्र)/ दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र, अंबाजोगाई ने गन्ना तोड़ने वाली महिला किसानों, स्वयं सहायता समूहों तथा ग्रामीण उद्यमियों द्वारा निर्मित प्रसंस्कृत उत्पादों के विपणन हेतु डिजिटल ऑनलाइन विपणन सुविधा केंद्र स्थापित किया है। केवीके द्वारा महिलाओं को कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन एवं उद्यमिता विकास पर विशेष कौशल प्रशिक्षण, जागरूकता बैठकें, गांव स्तर पर भ्रमण, समूह चर्चाएं तथा प्रेरणादायक शैक्षणिक यात्राएँ आयोजित की जाती हैं।

इन प्रयासों से महिलाओं ने बाज़ार की मांग के अनुरूप स्वादिष्ट, गुणवत्तापूर्ण और विविध प्रकार के 45 उत्पाद जैसे मिलेट आधारित खाद्य सामग्री, मसाले एवं विभिन्न प्रकार के अचार तैयार किए हैं। पहले विपणन एवं बिक्री की समस्या सबसे बड़ी बाधा थी, जिसे दूर करने के लिए केवीके ने 'छायाकार्ट' डिजिटल मंच के साथ सहयोग किया। केवीके ने महिला उत्पादकों को आकर्षक पैकेजिंग, लेबलिंग तथा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर उत्पाद सूचीबद्ध करने में सहयोग किया।

केवीके परिसर में बने विपणन हब पर उत्पादों को एकत्र कर, ऑर्डर प्राप्त होते ही कुशलतापूर्वक प्रोसेस कर ग्राहकों तक पहुँचाया जाता है और उत्पादकों को सीधा भुगतान किया जाता है। वर्तमान में इस पहल से 20 गांवों की 100 महिलाएँ जुड़ी हुई हैं, जिनके 7000 रुपये प्रतिदिन तक के ऑर्डर प्रोसेस किए जा रहे हैं। इस नवाचार से ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भरता और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में नई प्रेरणा मिली है।

पी. एम. विश्वकर्मा योजना उत्कृष्ट कार्य के लिए जन शिक्षण संस्थान बीड पुरस्कार से सम्मानित

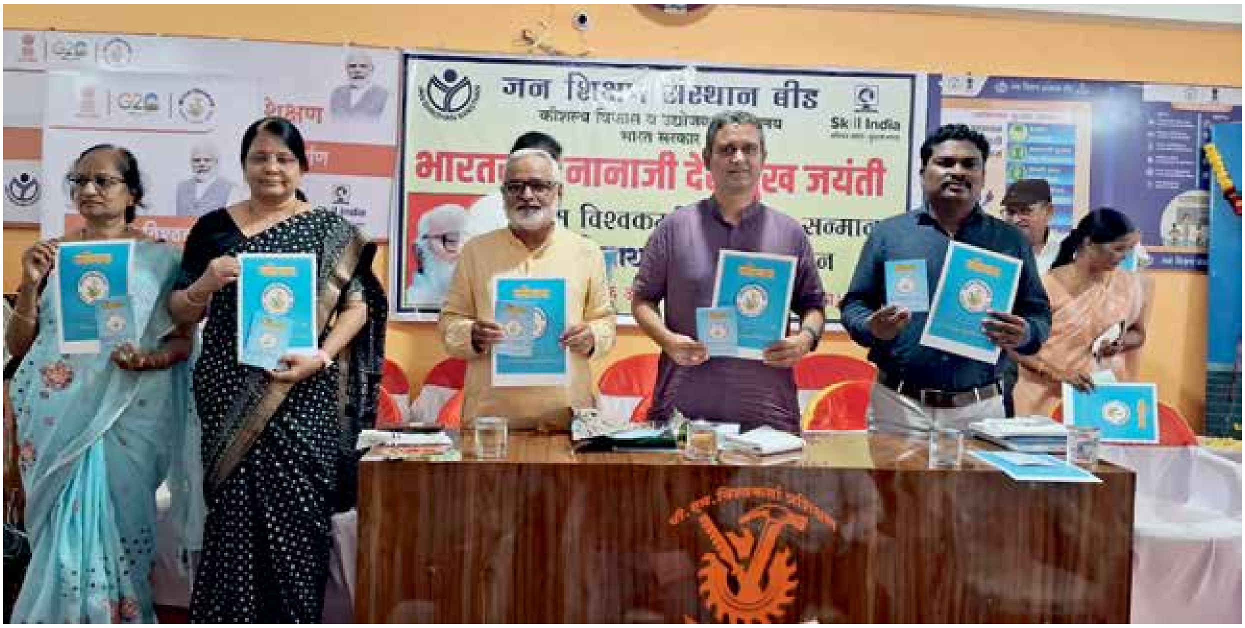

बीड, महाराष्ट्र/ अपने देश के 18 प्रकार के कारीगरों की सक्षमता के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना शुरू की गई है। इस योजना के अंतर्गत केवल प्रशिक्षण ही नहीं बल्कि आर्थिक सहायता भी की जाती है। पिछले एक साल से जन शिक्षण संस्थान बीड द्वारा बीड जिले के 1010 कारीगारों को, जिसमें कुम्हार, नाई, मालाकार, बढ़ई तथा टेलर को छह दिन के प्रशिक्षण दिये हैं। उन सभी को चार हजार रुपये प्राप्त हुई है। बढई कारीगरों को 15000/ की व्यावसायिक किट प्राप्त हुई है, 400 लोगों को बैंक द्वारा एक लाख रुपये कर्ज (ऋण) मिला है। प्रशिक्षण कालावधी में प्रतिदिन नये नये खेल खेले हैं जिससे वे बहुत खुश रहे हैं। प्रशिक्षण दौरान दिये गये मार्गदर्शन से प्रभावित होकर 16 लोग व्यसनमुक्त हुए है। इस उपलब्धी के कारण उनका पूरा परिवार भी दीनदयाल शोध संस्थान जन शिक्षण संस्थान से जुडे है, साथ ही सभी प्रशिक्षार्थी भी तन, मन, धन से संस्थान से जुड़े है।

बीड जिले में पीएम विश्वकर्मा के 18 प्रशिक्षण केंद्र है, लेकिन केवल 3, 4 केंद्र शुरू है उसने भी दीनदयाल शोध संस्थान का जन शिक्षण संस्थान द्वारा पी एम विश्वकर्मा प्रशिक्षण केंद्र अव्वल रूप में है ऐसा जिला समन्वयक द्वारा जाहीर रूप से कई बार कहा गया है। ऐसे प्रभावित कार्य के लिए महाराष्ट्र शासन के जिल्हा कौशल्य विकास रोजगार व मार्गदर्शन केंद्र बीड द्वारा उत्कृष्ट कार्य का पुरस्कार देकर सम्मानित किया है।

जन शिक्षण संस्थान, गोंडा

वित्तीय वर्ष 2025–26 में कार्य एवं प्रमुख गतिविधियां

माह अप्रैल में स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रम कराया गया। विगत वित्तीय वर्ष 2024-25 के 1800 लाभार्थियों का सर्टिफिकेट वितरण कराना तथा सफलता की कहानी एकत्र करना।

जून में मंत्रालय के आदेश पर वर्ष 2025-26 के कार्ययोजना एवं क्रियाकलाप क्षेत्रीय स्तर पर तैयार कर SIDH पोर्टल की वेबसाइट पर अपलोड करना जिसमें कुछ नये कोर्स जैसे सोलर पैनल, मशरुम एवं एडवांस कम्प्यूटर कोर्स आदि शामिल है।

21 जून 2025 को प्रत्येक सेन्टर पर योग दिवस का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया।

माह जुलाई में 5 बैच के प्रशिक्षणार्थियों का रजिस्ट्रेशन कर प्रशिक्षण का शुभारम्भ किया गया तथा 10 बैच के प्रशिक्षणार्थियों का रजिस्ट्रेशन 15 जुलाई तक कराया गया है जो कि शीघ्र ही प्रशिक्षण प्रारम्भ कराया जायेगा तथा बायोमेट्रिक उपस्थिति भी लगेगा।

15 जुलाई 2025 को विश्व युवा कौशल दिवस के रुप में मनाया गया जिसमें लगभग 250 चिन्मय ग्रामोदय विद्या इण्टर कालेज जयप्रभा ग्राम के छात्र-छात्राओं एवं प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया जिसका विषय ए.आई. एवं डिजिटल स्किल द्वारा युवाओं का सशक्तिकरण। साथ ही कौशल विकास केन्द्र के 10 वर्ष पूर्ण होने पर साथ ही 16 से 21 जुलाई तक विभिन्न प्रकार की गतिविधियां जैसे रैली, निबन्ध प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, वाल पेटिंग, वृक्षा रोपण आदि कार्यक्रम हुए। 16 से 31 जुलाई 2025 तक स्वच्छता जागरुकता कार्यक्रम मनाया गया।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के अन्तर्गत वैज्ञानिक पहुंचे किसान के द्वार

गांव में कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारियों ने किया किसानों से सीधा संवाद

मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान, कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां, सतना के अन्तर्गत विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत किसानों से सीधा संवाद किया गया।

पिथौराबाद पंचायत भवन में पद्मश्री बाबूलाल दाहिया की अध्यक्षता में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक, कृषि विभाग, उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों ने कृषि को कम लागत में ज्यादा उत्पादन, उन्नत कृषि तकनीकी एवं प्राकृतिक खेती पर किसानों के साथ संवाद किया।

जिसमें कुछ प्रगतिशील किसानों से चर्चा के दौरान उनके द्वारा किए गए प्राकृतिक खेती, शून्य बजट पर आधारित कृषि जैविक खेती पर चर्चा की गई, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, नरवाई प्रबंधन,फसल चक्र तथा हरी खाद के साथ में उन्नतशील कृषि यंत्रों एवं पशुपालन पर विस्तार से चर्चा हुई।

कृषि विभाग के अन्य सहयोगी विभाग पशुपालन, पशु चिकित्सा, उद्यान विभाग के अधिकारी कर्मचारी द्वारा आगामी खरीफ फसलों की खेत की तैयारी कैसे की जाए एवं कृषि की उन्नत तकनीकियों व सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक श्री पुष्पेंद्र सिंह गुर्जर, उद्यानिकी वैज्ञानिक श्री पंकज शर्मा, श्री जे.पी. सिंह कृषि तकनीकी प्रबंधक आत्मा ऊंचेहरा, श्री गणेश पांडे कृषि विस्तार अधिकारी, श्री प्रभात बागरी, श्री कृष्णापाल बागरी कृषि विस्तार अधिकारी, सुश्री आकांक्षा दीक्षित उद्यान अधिकारी, श्री बाबूलाल सेन पशु चिकित्सा अधिकारी, सुश्री रेणु सिंह पशु चिकित्सा अधिकारी के साथ पंचायत सचिव श्री छकौड़ीलाल सिंह, वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश दहिया, रोजगार सहायक श्री रामप्रसाद प्रजापति, श्री इंद्रपाल सिंह, श्री भगवानदास पांडेय सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणों की उपस्थिति रही।

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कम लागत में ज्यादा उत्पादन, उन्नत कृषि तकनीकी, मृदा परीक्षण, पराली प्रबंधन एवं प्राकृतिक खेती पर किसानों के साथ किया संवाद

मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां द्वारा केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के निर्देशन में मध्य प्रदेश सरकार के सहयोग से विकसित कृषि संकल्प अभियान का सुचारू रूप से संचालन सतना और मैहर जिले के सभी विकासखंडों में किया गया। जिसमें कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक, कृषि एवं उद्यान विभाग के अधिकारी कर्मचारी पशुपालन विभाग के कर्मचारी चयनित ग्राम पंचायत में सरपंच सचिव आंगनवाडी कार्यकर्ताओं के साथ किसानों के साथ नई तकनीकियों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई।

मैहर जिले के अमरपाटन विकासखंड अंतर्गत विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत पाल, अहिरगांव एवं मौहारी कटरा गांव में किसानों से सीधा संवाद किया गया। इस अभियान में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने विकसित कृषि संकल्प अभियान एवं कृषि में कम लागत में ज्यादा उत्पादन, उन्नत कृषि तकनीकी, मृदा परीक्षण, पराली प्रबंधन एवं प्राकृतिक खेती पर किसानों के साथ संवाद किया। कृषि विभाग के साथ अन्य सहयोगी विभाग, उद्यान विभाग के अधिकारी कर्मचारी द्वारा आगामी खरीफ फसलों की खेत की तैयारी कैसे की जाए, कृषि की उन्नत तकनीकियों व सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। उसी के अन्तर्गत ही नागौद विकास खंड में तीन ग्राम पंचायत दुरेहा, उमरी बृज, सितपुरा में विकसित कृषि संकल्प अभियान का आयोजन किया गया। नागौद विकास खंड में कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. नवीन शर्मा ने नई उन्नत किस्मों के बारे में विस्तृत जानकारी दी साथ ही धान की सीधी विजाई के बारे में बताया उससे होने वाले लाभों से अवगत कराया। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. हेमराज द्विवेदी ने प्राकृतिक खेती के बारे में किसानों को बताया। कृषि विभाग से श्री एस के सिंह चौहान ने कृषि विभाग द्वारा संचालित योजना की जानकारी दी साथ ही मृदा परीक्षण के बारे में बताया।

इस अवसर पर लगभग 524 कृषक एवं 48 महिलायें उपस्थित रहे। ग्राम पंचायत सरपंच श्रीमति राजकुवर पटेल एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता उद्यान विभाग से श्री ध्रुव सिंह लोधी, पशुपालन से श्री एच.पी. वर्मा के साथ प्रधानमंत्री फसल बीमा के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

केवीके द्वारा वैज्ञानिक कृषक परिचर्चा का आयोजन

उन्नत किस्मों के बीजों की जानकारी, मृदा स्वास्थ्य कार्ड एवं मृदा नमूना लेने की तकनीकी की दी गई जानकारी

खेती में कृषि रसायनों के छिड़काव हेतु एग्री ड्रोन तकनीक का बताया उपयोग

मझगवां/ दीनदयाल शोध संस्थान, कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां, सतना के द्वारा विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत मैहर जिले के रामनगर विकासखंड में ग्राम मसमासी, पुरैना एवं देवरी कला एवं मझगवां विकासखंड के कौहरी, गोपालपुर एवं जबलपुर की उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न हुआ। वहीं एक अन्य कार्यक्रम के अन्तर्गत रामपुर बघेलान विकासखंड के तहत तिहाई, लखनवाह एवं अबेर गांवों में वैज्ञानिक कृषक परिचर्चा का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. जोर दिया गया। कार्यक्रम में कृषि विभाग के विभिन्न प्रकार की योजनाओं एवं उनका लाभ किसानों को कैसा कैसे मिले इस पर विस्तार से वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री विष्णु त्रिपाठी द्वारा दी गई।

उक्त कार्यक्रम में दीनदयाल शोध

जवारिन गांवों में वैज्ञानिक कृषक परिचर्चा का आयोजन किया गया। ग्राम पुरैना में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रामखेलावन कोल, जिला पंचायत अध्यक्ष सतना एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. शालिनी चक्रवर्ती प्रधान वैज्ञानिक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अटारी जोन - 9 शालिनी चक्रवर्ती द्वारा कृषकों को खाद्य प्रसंस्करण एवं विभिन्न विभागीय योजना का अधिक से अधिक किसानों तक लाभ मिले इस पर जानकारी साझा की गई। अध्यक्षता कर रहे श्री रामखेलावन कोल द्वारा विकासखंड में विभिन्न तकनीकियों एवं योजनाओं का लाभ ग्रामीण स्तर तक पहुंचे इस पर संस्थान, कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश जागरे एवं डॉ. अशोक शर्मा द्वारा किसानों को खरीफ फसलों की उत्पादन तकनीक, उन्नत किस्मों के बीजों की जानकारी, समसामयिकी एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड एवं मृदा नमूना लेने की तकनीकी की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में उद्यान

कार्यक्रम में कृषि विभाग के विभिन्न प्रकार की योजनाओं एवं उनका लाभ किसानों को कैसा कैसे मिले इस पर विस्तार से वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री विष्णु त्रिपाठी द्वारा दी गई।

विभाग से श्री अमरेंद्र मिश्रा द्वारा उद्यान विभाग की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई साथ ही पशुपालन विभाग के डॉ. दिवाकर द्विवेदी द्वारा पशुपालन विभाग के अंतर्गत आचार्य विद्यासागर योजना एवं पशुपालन की समसामयिकी पर चर्चा की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवां के शस्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ अजय चौरसिया द्वारा उन्नत तकनीकें जैसे क्षेत्र के लिए अनुकूल उन्नतशील प्रजातियाँ, मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक अनुप्रयोग विधि, ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई, धान की सीधी बुवाई विधि, उड़द की ऊँची क्यारी विधि से बुवाई, प्राकृतिक खेती पद्धति से फसल उत्पादन, कृषि रसायनों के छिड़काव हेतु एग्री ड्रोन तकनीक का उपयोग, मक्का की और फसल विविधीकरण एवं उन्नत कृषि यंत्रों आदि विषयों पर किसानों के साथ सार्थक परिचर्चा की।

रामपुर बाघेलान कृषि विभाग के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री अशोक कुमार निगम द्वारा मृदा परीक्षण एवं विभागीय योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की साथ ही उद्यान विभाग के अधिकारी द्वारा सरकारी योजनाओं एवं कृषि अभियांत्रिकी के अधिकारियों द्वारा कृषि यंत्रों की जानकारी दी गई।

मझगवां के वरिष्ठ उद्यान विकास अधिकारी श्री मोहन सिंह मरावी द्वारा विभागीय योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। कृषि विज्ञान केन्द्र के श्री अरविंद सिंह द्वारा वर्षा जल संरक्षण के बारे में विस्तार से बताया, कृषि विस्तार अधिकारी श्री अजय बागरी द्वारा कृषि विभाग की जानकारी दी गई।

संगठन ही समस्त समस्याओं का समाधान है : अभय महाजन

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला

कोलकाता, 8 जून। "चुनौतियां हमारी परीक्षा लेने के लिए सामने खड़ी हैं। मात्र सत्ता परिवर्तन से देश का भला नहीं हो सकता। व्यक्ति परिवर्तन से ही समाज परिवर्तन संभव है। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वत्व का जागरण, पर्यावरण, सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन एवं नागरिक कर्तव्य प्रवृत्ति ऐसे पंच परिवर्तन हैं जिन्हें हम अपने जीवन में चरितार्थ कर समाज और राष्ट्र को उन्नत बना सकते है।" ये उद्गार हैं दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन के, जो कोलकाता में भारतीय भाषा परिषद सभागार में रविवार 8 जून 2025 को आयोजित आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला के बीसवें आयोजन के अंतर्गत "बदलते राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पंच परिवर्तन की प्रासंगिकता' विषय पर बतौर प्रधान वक्ता बोल रहे थे।

श्री महाजन ने कहा कि "स्व" जागरण से अपने पुरुषार्थ को जाग्रत करना चाहिए, "स्वदेशी" से जीवन में आत्मगौरव का आभास होगा, "सामाजिक समरसता" प्रायोजित कार्यक्रमों से नहीं बल्कि सहभागिता से आयेगी। उन्होंने आगे कहा कि "पर्यावरण' की अनुकूलता से हमारे जीवन में शांति आयेगी और "अधिकार नहीं कर्तव्य" के पालन से समाज विकसित होगा। अतः इन पंच परिवर्तनों को जीवन में अपनाने से ही न केवल राष्ट्र समृद्ध होगा बल्कि विश्व गुरु का सम्मान पुनः प्राप्त कर सकेगा।

समारोह के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री शिशिर बाजोरिया ने कहा कि स्वदेशी ने एक बार फिर अपना पराक्रम दिखलाया जब ऑपरेशन सिंदूर के क्रम में भारतीय सेना ने मेक इन इंडिया के तहत बने आयुधों से आतंक की नाभि को निशाना बनाया। स्वाधीनता की शताब्दी से पूर्व भारत के एक विकसित राष्ट्र बन जाने का हमारा संकल्प अवश्य पूर्ण होगा।

मुख्य अतिथि वरिष्ठ आयकर सलाहकार श्री सज्जन कुमार तुलस्यान ने भारत के बदलते स्वरूप की ओर संकेत करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि भारत को एक आर्थिक महाशक्ति तो बनना ही है। एक दशक पहले हम दुनिया की ग्यारहवीं आर्थिक शक्ति थे और आज तीसरी आर्थिक शक्ति बनने जा रहे हैं। हम सभी को सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आर्थिक दृष्टि से संकल्पबद्ध होकर कार्य करना होगा।

कार्यक्रम के आरंभ में आचार्य विष्णुकांत शास्त्री द्वारा रचित गीत की सांगीतिक प्रस्तुति सुप्रसिद्ध गायक श्री ओम प्रकाश मिश्र ने दी। स्वागत भाषण दिया पुस्तकालय की साहित्य मंत्री डॉ. तारा दूगड़ ने तथा धन्यवाद ज्ञापन पुस्तकालय के मंत्री श्री बंशीधर शर्मा ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन कुमार सभा के अध्यक्ष श्री महावीर बजाज ने किया।

विकसित कृषि संकल्प अभियान में कमिश्नर, कलेक्टर सहित कृषि वैज्ञानिकों और जिले के अधिकारियों ने किसानों से किया सीधा संवाद

डीएसआर पद्धति से धान की सीधी बीजाई की विधि का किया गया प्रदर्शन

प्राकृतिक खेती एवं गौ मूत्र से बनी कीटनाशक दवाओं का उपयोग ही समय की आवश्यकता – सांसद श्री गणेश सिंह

जन सहयोग से नदी, नालों, तालाबों का संरक्षण करते हुए पानी के लिए होना होगा आत्मनिर्भर – श्री अभय महाजन

मझगवां/ विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम के तहत दीनदयाल शोध संस्थान कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां एवं जिला प्रशासन के सहयोग से सोहावल विकासखंड के ग्राम पंचायत माँद के श्याम गौशाला में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन अध्यक्षता कर रहे थे, मुख्य अतिथि के रूप में सतना जिले के लोक प्रिय सांसद श्री गणेश सिंह जी रहे, विशिष्ट अतिथि के रूप में आयुक्त रीवा श्री बी.एस. जामोद, सतना कलेक्टर डॉ. सतीस कुमार एस, जिला पंचायत अध्यक्ष सतना श्री राम खेलावन कोल, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती सुस्मिता सिंह, जिला पंचायत सी.ई.ओ. सुश्री संजना जैन सहित मध्य प्रदेश व छत्तीस गढ़ के कृषि विज्ञान केंद्रों के अटारी निदेशक डॉ. एस आर के सिंह उपस्थिति रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता एवं राष्ट्र ऋषि नाना जी देशमुख व पंडित दीनदयाल जी के चित्रों पर पुष्पांजलि एवं दीपप्रज्ज्वलन करके किया गया। सर्वप्रथम डीएसआर पद्धति से धान की सीधी बीजाई की विधि का प्रदर्शन अतिथियों एवं किसानों के सामने किया गया। सतना जिले में पानी की कमी एवं श्रमिकों की कमी को देखते हुए यह पद्धति बहुत ही लाभ कारी सिद्ध हो रही है, इस विषय पर विस्तृत जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र के फसल उत्पादन वैज्ञानिक डॉ. अजय चौरसिया ने दी। इस दौरान कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. नवीन कुमार शर्मा ने विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम के बारे में बताया जिसमें 29 मई से 12 जून तक यह कार्यक्रम समस्त ग्राम पंचायतों में चला।

जिला पंचायत अध्यक्ष श्री राम खेलावन कोल ने बताया की सीधी बिजाई बहुत ही लाभ कारी है। उन्होंने कहा कि पिछले कई दिनों से मेरा कई ग्राम पंचायतों में जाना हुआ है। यह कार्यक्रम सफल कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम में वैज्ञानिकों के साथ-साथ विभाग के अधिकारी जाकर अपने अपने विभाग की जानकारी देते है।

सीईओ सुश्री संजना जैन ने बताया कि खेती के साथ-साथ प्रकृति से प्राप्त संसाधनों का संरक्षण एवं खेत तालाब योजना के साथ-साथ किसानों को तालाब के लिए एवं पुराने तालाबों के संरक्षण के लिए बताया।

कलेक्टर सतना डॉ. सतीश कुमार एस ने बताया की यहगौ शाला स्वयं सहायता समूह को मिली है यह अच्छा

काम है। इनके अपशिष्ट से गोबर की खाद एवं प्राकृतिक खेती के लिए खाद तैयार की जा सकती है। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन लिए कृषि विज्ञान केंद्र के सभी कार्यकर्ताओं को बधाई भी दी।

मध्य प्रदेश व छत्तीस गढ़ के कृषि विज्ञान केंद्रों के अटारी निदेशक डॉ. एस आर के सिंह ने बताया कि कृषि हमारे देश की रीढ़ की हड्डी है हमारे वैज्ञानिक किसानों के द्वार पर जा रहे है उन्हें उन्नत तकनीकी से अवगत करा रहे है, अभी मौसम बहुत ही बदल रहा है इसलिए मौसम अनुकूल खेती के साथ-साथ प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्रेरित किया।

आयुक्त रीवा श्री बी.एस. जामोद ने वर्षा जल संचयन व गंगा जल संवर्धन विषय पर बताया कि सतना में पानी की कमी को देखते हुए फसलों का उत्पादन करें, साथ ही समूह बना कर छोटे छोटे प्रयोग करें। पानी का संरक्षण करें साथ ही कीटनाशक दवा का छिड़काव करने के लिए ड्रोन का उपयोग करें जिससे समय और पैसा दोनों बचेगा।

सांसद सतना श्री गणेश सिंह ने कहा कि विकसित कृषि संकल्प अभियान भारत सरकार के कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के निर्देशन में पूरे देश में यह कार्यक्रम चल रहा है। इस कार्यक्रम से किसानों को अच्छा लाभ होगा। हमारे क्षेत्र के लिए उपयोगी तकनीकी एवं बीज कृषि वैज्ञानिकों के माध्यम से जो बताया गया है बहुत ही फायदेमंद साबित होगा। प्राकृतिक खेती एवं गौ मूत्र से बनी कीटनाशक दवाओं का उपयोग करें और रासायनिक दवाओं का कम उपयोग करें, साथ ही बताया कि मोटे अनाजों की खेती को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने बताया कि किसान हमारा सबसे ज्यादा अनुभवी है। हमारा परंपरागत ज्ञान हम भूलते जा रहे हैं, श्री अन्न के बारे में बताया, प्राकृतिक खेती के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में पानी की समस्या दिन ब दिन बढ़ती जा रही है जब तक वर्षा का जल भू गर्भ जल से नहीं मिलेगा तब तक पानी की स्थिति नहीं सुधरेगी। हमें पानी के लिए भी आत्म निर्भर बनना पड़ेगा। साथ ही किसानों से अपील की कि ग्रामीण स्तर में जन सहयोग से नदी, नालों और तालाबों का संरक्षण करें, दीनदयाल शोध संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के सभी कार्यकर्ता सदैव किसानों के लिए उपलब्ध है।

कार्यक्रम के अंत में सोहवाल कृषक उत्पादक संगठन की मुख्य कार्य पालन अधिकारी श्रीमति साधना तिवारी ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के वैज्ञानिक डॉ. हेमराज द्विवेदी ने किया। उक्त कार्यक्रम में सतना किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष डॉ. कृष्णा पांडे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. नवीन कुमार शर्मा, उप संचालक कृषि श्री मनोज कश्यप, उप संचालक हार्टिकल्चर श्री अनिल जी, उप-संचालक पशुपालन, उपसंचालक अभियांत्रिकी, जनपद सी.ई.ओ. श्री बागरी जी, सरपंच, सचिव के साथ-साथ इफको से मौर्या जी एवं उनकी टीम, श्री संदीप तिवारी, डॉ. अजय चौरसिया, श्री अभिषेक, सुश्री वैष्णवी आजीविका स्वयं सहायता समूह की महिलायें एवं आस पास की पंचायतों के 343 कृषक एवं 78 महिला कृषक उपस्थित रहे।

टिकाऊ कृषि विकास हेतु समेकित तकनीकी एवं ग्रामीण कृषक क्रेता-विक्रेता सम्मेलन

आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एम एल जाट रहे मौजूद

दो दिवसीय सम्मेलन में किसानों, खरीददार कम्पनियों, शासकीय संस्थाओं एवं कृषि तकनीकी, नवीन अन्वेषण विषयों पर हुआ विचार– विनिमय

कृषि के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले भारत सरकार से पुरस्कृत 6 पदमश्री प्राप्त कृषकों को किया गया सम्मानित

चित्रकूट / दीनदयाल शोध संस्थान एवं विंध्याचल कृषक उत्पादक संगठन ग्वालियर (एफ.पी.ओ) के संयुक्त तत्वावधान में "टिकाऊ कृषि विकास हेतु समेकित तकनीकी एवं ग्रामीण कृषक क्रेता-विक्रेता" सम्मेलन का शुभारंभ उद्यमिता विद्यापीठ के लोहिया सभागार दीनदयाल परिसर चित्रकूट में हुआ। संगोष्ठी में अतिथि के रूप में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एम.एल.जाट, दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन, आईसीएआर के उप महानिदेशक कृषि डॉ. राजवीर सिंह, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसी के कुलपति डॉ. एके सिंह, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय इंफाल के कुलपति डॉ. अनुपम मिश्रा, विंध्याचल एफपीओ ग्वालियर के निदेशक श्री देवेंद्र सिंह भदौरिया प्रमुख रूप से उपस्थित रहे, इन्होंने माँ सरस्वती एवं राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख व पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की प्रतिमा के समक्ष पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर कृषि, जैव विविधता एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले भारत सरकार से सम्मानित 6 पदमश्री प्राप्त कृषकों को मंचासीन अतिथियों एवं दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन द्वारा सम्मानित किया गया। जिसमें पदमश्री बाबूलाल दाहिया, पदमश्री कंवल सिंह चौहान, पदमश्री सेठपाल सिंह, पदमश्री भारत भूषण त्यागी, पदमश्री उमाशंकर पांडे, पदमश्री लक्ष्मण सिंह का सम्मान हुआ।

अपने मुख्य आतिथ्य उद्बोधन में भारत सरकार के सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. एम एल जाट ने कहा कि बाजार के बगैर किसानों को उचित मूल्य मिलना संभव नहीं है। जब तक उसे उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक वह खेती से नहीं जुड़ पाएंगे। दीनदयाल शोध संस्थान इस दिशा में लगातार कार्य कर रहा है। क्रेता एवं विक्रेता में आपसी सामंजस्य बनाकर अच्छे दाम प्राप्त किया जा सकता है।

दो दिवसीय सम्मेलन की प्रस्तावना रखते हुए विंध्याचल एफपीओ ग्वालियर के निदेशक श्री देवेंद्र सिंह भदोरिया ने बताया कि इसका मुख्य उद्देश्य किसानों, खरीददार कम्पनियों, शासकीय संस्थाओं एवं कृषि तकनीकी, नवीन अन्वेषण के बीच विचार-विनिमय तथा समाधान केंद्रित संवाद को प्रोत्साहित करना है। जिससे टिकाऊ और लाभकारी कृषि व्यवस्थाओं को प्रोत्साहन मिल सके।

उद्घाटन सत्र में रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसी के कुलपति डॉ. अशोक कुमार सिंह ने कहा कि किसानों को तकनीकी चाहिए और उसके उत्पाद का मूल्य अच्छा मिलना चाहिए। बुंदेलखंड में सरसों एवं मूंग का क्षेत्रफल लगातार बढ़ रहा है परंतु खेती के साथ-साथ पशु उत्पादन को भी बढ़ावा आज की जरूरत है। संरक्षित खेती की तकनीकियां तथा जैव विविधता बुंदेलखंड का गौरव है इसे संरक्षित एवं संवर्धन करने की आवश्यकता है। खेती से जुड़ी विभिन्न संस्थाएं एवं अच्छे एफपीओ के बीच एम ओ यू करके बीज उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

दीनदयाल शोध संस्थान के प्रधान सचिव श्री अतुल जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानव दर्शन को प्रत्यक्ष रूप में धरातल पर उतारने का कार्य नाना जी ने दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से करके दिखाया है। समग्र ग्राम विकास की अवधारणा को लेकर दीनदयाल शोध संस्थान पिछले तीन दशक से काम कर रहा है। डीआरआई अपने चार कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा 17 एफपीओ के माध्यम से वैज्ञानिक आधार पर इन सभी बिंदुओं पर काम कर रहा है। यह दो दिवसीय कार्यशाला इस दिशा में निश्चित तौर पर बहुत कारगर साबित होगी। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. पुनीत चौहान सीनियर साइंटिस्ट सीएसआईआर लखनऊ के द्वारा किया गया। इस अवसर पर कृषक उत्पादक संगठनों द्वारा तैयार उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस अवसर पर दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित, सचिव श्री राजेश महाजन सहित देश भर की विविध संस्थानों से सीनियर साइंटिस्ट एवं कृषि उत्पादों के क्रेता-विक्रेता उपस्थित रहे।

टिकाऊ कृषि विकास एवं कृषक उत्पादों के मूल्य संवर्धन पर आधारित राष्ट्रीय कार्यशाला में आमदनी का जरिया बदलने हेतु समेकित कृषि तकनीकी पर दिया गया जोर

चित्रकूट / दीनदयाल शोध संस्थान एवं विंध्याचल कृषक उत्पादक संगठन ग्वालियर (एफपीओ) के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला 'टिकाऊ कृषि विकास हेतु समेकित तकनीकी' एवं 'ग्रामीण कृषक क्रेता-विक्रेता' सम्मेलन का समापन उद्यमिता विद्यापीठ के लोहिया सभागार दीनदयाल परिसर चित्रकूट में हुआ। समापन सत्र में पद्मश्री लक्ष्मण सिंह, पद्मश्री भारत भूषण त्यागी, पद्मश्री कमल सिंह चौहान, श्री श्याम बिहारी गुप्ता, अध्यक्ष गौ सेवा आयोग, श्री निखिल प्रभाकर मुण्डले कार्यकारी अध्यक्ष दीनदयाल शोध संस्थान, श्री ओम त्यागी उपाध्यक्ष यूसीएल मंचासीन रहे।

राष्ट्रीय कार्यशाला का संयोजन कर रहे डॉ मनोज त्रिपाठी ने बताया कि कार्यशाला के माध्यम से किसान और सरकारी संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय हेतु सुझाव तैयार करना है। टिकाऊ और लाभकारी कृषि व्यवस्थाओं को प्रोत्साहन के लिए यह कार्यशाला लाभदायक साबित हुई है।

तकनीकी सत्र गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्धता विषय पर डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह-निदेशक, राष्ट्रीय पादप आनुवाशिक संसाधन ब्यूरों ने बताया

कि औपचारिक बीज एवं अनौपचारिक बीज का आंशिक संशोधन करके किसानों के पास भेजना और उसे लाभपद्र बनाना होगा। नए बीजों का प्रयोग नदी के किनारे वाले ग्रामीण क्षेत्रों पर ज्यादा किया गया जिससे इनका क्षेत्र सीमित रह गया। तकनीकी हस्तान्तरण बीजों के लिए जरुरी है जो नहीं हो पाया है। किसान समूहों के माध्यम से किसानों के पास पहुँचाना जिससे किसानों की स्थिति में सुधार हो सकें।

पद्मश्री बाबूलाल दहिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें ऐसा बाजार विकसित करना होगा ऐसी खेती करनी होगी जो हमारे खेत की मांग हो। हम ऐसी खेती न करें जो बाजार मांग रहा हो। खाद्य श्रृखंला को हमने बिगाड़ दिया जो हमारे जीवन एवं कृषि के लिए आवश्यक है। पहले हमारी जो खेती थी वो पेट के लिए रहती थी आज की खेती सेठ की खेती हो गई हैं। हमें परम्परागत कृषि अनाज की आवश्यकता है और ठीक-ठाक अनाज उगाने की जरुरत है वो ऐसे हो जो हमें आर्थिक लाभ और स्वास्थ्य लाभ भी दे सकें।

तकनीकी सत्र- एकल खिडकी पहुँच बाजार विषय पर डॉ. शंकरलाल जाट-निदेशक भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने बताया कि हमें उत्पादन, उपभोक्ता और बाजार को आपस में जोड़ना होगा। "नजर नहीं नजरिया बदलो, आमदनी का जरिया बदलो" कृषि, पशुपालन, मुर्गीपालन, बकरीपालन को हम आमदनी का जरिया बनायें। हमें अधिक से अधिक मूल्य मिले क्रेता को कम मूल्य पर सामान मिले दोनों में सामंजस्य बनाना होगा।

डॉ. राजवीर सिंह, उपमहानिदेशक

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने बताया कि बाजार की समस्या किसानों को आती है जिसमें सुधार की जरुरत है। पिछले तीन दशकों से किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। प्रत्येक किसानों का एक व्हाट्सअप समूह बनाना चाहिए जिससे प्रत्येक सूचना किसानों को भेजी जा सके। इस श्रृंखला में उत्पादक, मालवाहक, मंडी का सही समन्वय होना चाहिए।

पद्मश्री भारत भूषण त्यागी ने कहा कि आज की परिस्थितियों में व्यवस्था के आधार पर समाधान से आगे बढ़ना होगा। हम प्रकृति के सिद्धान्तों को समझे और वैज्ञानिक सोच से आगे बढ़े।

पद्मश्री उमाशंकर पाण्डेय ने कहा कि राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख ने पूर्व प्राथमिक से विश्वविद्यालय तक की शिक्षा व्यवस्था के लिए चित्रकूट में कार्य किया। सड़क, पानी, कृषि आदि सभी आयामों पर दीनदयाल शोध संस्थान कार्य कर रहा है। वर्तमान समय में तकनीकी फसलों की पैदावार बुन्देलखण्ड का सर्वाधिक गेंहू उत्तर प्रदेश सरकार ने क्रय किया है जो बुन्देलखण्ड की प्रगति को दर्शाता है।

तकनीकी सत्र किसान उद्यम संबंधों के लिए रणनीतिक योजना पर डॉ. शान्तनु कुमार दुबे निदेशक, आई.सी.ए.आर. अटारी कानपुर ने बताया कि किसान उत्पादन के मूल्य संवर्धन में किसानों के समूहों की महत्वपूर्ण भूमिका है। क्रेता-विक्रेता का संवाद सापेक्ष है।

कार्यशाला के तकनीकी सत्र के क्रम में प्राकृतिक एवं जैविक खेती, तकनीकी एवं बाजार एकीकरण तथा समूह में पारंपरिक लघु प्रसंस्करण विषयों पर पदमश्री कंवल सिंह, पद्मश्री सेठपाल सिंह, पदमश्री लक्ष्मण सिंह, गोसेवा आयोग के अध्यक्ष श्री श्याम बिहारी गुप्ता, सीरी पिलानी के प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. रिषि शर्मा, डॉ. प्रवीण सिंह, आईसीएआर से डॉ. ओ एन त्रिपाठी, डॉ. अनिल तोमर, डॉ. ओम त्यागी, डॉ. कुलदीप त्रिपाठी, आईआईएम अहमदाबाद से डॉ. वरुण यादव, आईआईटी रुड़की से श्री आशीष पांडेय, दीनदयाल शोध संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित, सीएसआईआर के सीनियर साइंटिस्ट डॉ. पुनीत चौहान का मार्गदर्शन मिला।

समापन सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए श्री निखिल प्रभाकर मुण्डले ने कहा कि टिकाऊ कृषि प्रथाओं को अपनाने के लिए, किसानों को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता प्रदान करने के साथ-साथ कृषक-क्रेता-विक्रेता संबंधों को मजबूत करने के लिए सरकार को एक मंच स्थापित करना होगा जहां ये सभी पक्ष एक साथ आ सकें और एक दूसरे के साथ बातचीत कर सहभागी बन सकें। धन्यवाद ज्ञापन श्री वसन्त पंडित, कोषाध्यक्ष दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किया गया। अंत में सभी पंजीकृत कृषकों को अतिथियों द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किये गए।

एक पेड़ मां के नाम अभियान 2.0: मंदाकिनी के लिए वृक्षारोपण में शामिल हों - श्री अभय महाजन

मंदाकिनी नदी को हराभरा और सदानीरा बनाएं रखने रजोला आरक्षित वन में आकर करें पौधरोपण

वन विभाग द्वारा 25 हजार गड्ढे तैयार, जनभागीदारी से वृक्षारोपण का शुभारंभ

चित्रकूट/ मंदाकिनी नदी के जल ग्रहण क्षेत्र अंतर्गत रजौला आरक्षित वन, चित्रकूट-सतना रोड के किनारे, “एक पेड़ मां के नाम अभियान 2.0” के तहत जनभागीदारी से वृक्षारोपण का शुभारंभ किया गया। अविरल एवं निर्मल मां मन्दाकिनी स्वच्छता एवं जनजागरण अभियान के तहत दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन के मार्गदर्शन में संस्थान के कार्यकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता एवं प्रशासन द्वारा वन विभाग के सौजन्य से व्यापक वृक्षारोपण अभियान शुरू हुआ।

इस अवसर पर डीआरआई के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने सभी क्षेत्रवासियों से अनुरोध किया कि पर्यावरण संरक्षण और मंदाकिनी जी की अविरल धारा को अनवरत बनाए रखने के लिए इस पुनीत कार्य में ज्यादा से ज्यादा पौधरोपण करें। श्रीराम सांस्कृतिक वन के सामने वन विभाग, चित्रकूट द्वारा 25 हजार गड्ढे तैयार किये गए। जिसमें दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकताओं और जन सहयोग से प्रातः 6:30 से 7:30 तक रेजोला आरक्षित वन में पौधरोपण का कार्य हुआ।

चित्रकूट के घाट पर भई योगिन की भीर, सब संस्थानों के संयोग से निरोगी रहे शरीर

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय खेल प्रांगण चित्रकूट में संतों सहित 108 योग केन्द्र के साधकों ने किया सामूहिक योग

चित्रकूट/ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर चित्रकूट की सभी संस्थाएं दीनदयाल शोध संस्थान, सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट, ग्रामोदय विश्वविद्यालय, गायत्री शक्तिपीठ सहित 108 योग केन्द्र और चित्रकूट के सभी संत आश्रम सभी ने एक साथ सामूहिक रूप से सुरेंद्रपाल ग्रामोदय विद्यालय खेल प्रांगण, दीनदयाल परिसर में योग किया।

दीनदयाल शोध संस्थान के समस्त स्वावलम्बन केन्द्रों एवं सम्पर्कित केन्द्रों पर भी ग्रामवासियों ने सतत् योग में भाग लिया। इस अवसर पर पूज्य संत श्री मदन गोपाल दास जी, पूज्य संत महन्त सीताशरण जी महाराज, पूज्य संत दिव्य जीवन दास जी, पूज्य संत गोविन्द दास जी, गायत्री शक्ति पीठ के संचालक डॉ. रामनारायण त्रिपाठी, पंडित राम विशाल शुक्ल, चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलगुरू प्रो. भरत मिश्रा, जानकीकुण्ड चिकित्सालय के ट्रस्टी पद्मश्री डॉ. बी. के. जैन, दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन, कोषाध्यक्ष वसंत पंडित ने योग दिवस के अवसर पर मंच को सुशोभित किया।

योग कार्यक्रम के संयोजक श्री सुरेन्द्र पाल ग्रामोदय विद्यालय के प्राचार्य श्री मदन कुमार तिवारी ने योग कार्यक्रम की रूपरेखा को प्रस्तुत किया। जबकि चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के सेवा निवृत्त प्राध्यापक प्रो. तुषारकांत शात्री ने न केवल प्रशिक्षाणार्थियों को त्रिदिवसीय प्रशिक्षण दिया बल्कि उक्त सम्पूर्ण कार्यक्रम का सफल निर्देशन भी किया।

कुलगुरू डॉ. भरत मिश्रा ने अपने संबोधन में योग का महत्व बताते हुये

''साथ चले, साथ बढे" के मूल मंत्र का अहवान किया। उन्होंने योग के द्वारा भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देषमुख जी को स्मरण करते हुये उनके निरोग चित्रकूट की परिकल्पना को साकार रूप देने की बात की।

पद्मश्री ड\. बी.के जैन ने दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी को इस सम्पूर्ण सफल आयोजन का श्रेय दिया। उन्होंने दीनदयाल शोध संस्थान के निर्मल अविरल मां मन्दाकिनी गंगा के आन्दोलन की सफलता की शुभकामनायें भी प्रेषित की।

दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन ने कहा कि इस बार 108 केंद्रों पर कार्यकर्ताओं एवं संकुल प्रभारियों तथा 200 से अधिक प्रशिक्षकों के माध्यम से सात दिवसीय प्रशिक्षण संचालित किया गया। योग दिवस के इस कार्यक्रम के माध्यम से संपूर्ण चित्रकूट एक इकाई के रूप में एक जगह एकत्रित होकर सामूहिकता का एहसास कराता है कि हम सब एक हैं। हम सभी इसे अपने जीवन में समाहित करें ऐसी सभी से अपेक्षा है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून को सामूहिक वृहद कार्यक्रम सुरेंद्रपॉल ग्रामोदय विद्यालय खेल प्रांगण, दीनदयाल परिसर में आयोजित किया गया। जिसके लिए प्रातः 5:45 बजे एकत्रीकरण रखा गया। उसके बाद प्रातः 6:00 से 7:00 तक योग की सभी क्रियाएं संपन्न कराई गई। इस दौरान इस सामूहिक कार्यक्रम में चित्रकूट क्षेत्र में 14 जून से चल रहे सभी 108 योग केंद्रों से योग साधक इस सामूहिक कार्यक्रम में शामिल हुए, इस दौरान कुल संख्या 1300 के लगभग रही।

जन शिक्षण संस्थान द्वारा जिला कारागार रगौली में आयोजित किया गया योग दिवस

कारागार परिसर में किया गया पंचवटी के बृक्षों का रोपण

चित्रकूट/ 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिला कारागार रगौली परिसर में कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित व दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा संचालित जन शिक्षण संस्थान चित्रकूट द्वारा जनभागीदारी के अन्तर्गत महिला / पुरुष बन्दियों को योग कराया गया।

इस अवसर पर जेल अधीक्षक श्री शशांक पाण्डेय, श्री संतोष कुमार वर्मा जेलर, डॉ. विकास सिंह, डॉ. मनोज राजपूत जेल चिकित्सक, डिप्टी जेलर श्री प्रमोद कन्नौजिया, श्री अखिलेश कुमार पाण्डेय, सुश्री बृजकिशोरी के साथ-साथ श्री अनिल कुमार सिंह निदेशक जन शिक्षण संस्थान उपस्थित रहे।

विश्व योग दिवस पर अपने उद्बोधन में जेल अधीक्षक श्री शशांक पाण्डेय ने कहा कि उत्तम स्वास्थ्य जीवन का सबसे बड़ा धन है, योग के माध्यम से व्यक्ति को समाज से जोड़ने की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है। योग द्वारा शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को एक साथ लाने का काम होता है। जीवन में चार सोपान होते हैं चारों सोपानों को व्यवस्थित रखने के लिए 14 इंद्रियां होती हैं जिसमें पांच कर्मेंद्रियां पांच ज्ञानेंद्रियां एव 4 सूक्ष्म इंद्रियां होती हैं जो अंतः करण की दशा को प्रगट करती हैं जिसमें मन बुद्धि अहंकार और चित् जीवन को आरोग्य रखने के लिए जिस प्रकार आयुर्वेद जीवनदायिनी है उसी प्रकार इन चारों सूक्ष्म सोपानों को स्वस्थ रखने के लिए हमारे जीवन में योग की भूमिका महत्वपूर्ण है।

श्री संतोष कुमार वर्मा जेलर ने कहा कि योग केवल 1 दिन ना हो बल्कि इसे जीवन का आधार बनाएं एवं अपने जीवन में योग को नियमित चलने वाले क्रिया विधि के रूप में अपनाकर इसे अपने जीवन में उतारे और सदैव स्वस्थ रहें।

जन शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री अनिल कुमार सिंह ने कहा कि जन भागीदारी से एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग के अंतर्गत पतंजलि योग पीठ के बन्धु श्री जानकी शरण निषाद एवं बहनें श्रीमती पद्मा सिंह व कुमारी अनन्या सिंह के सहयोग से जिला कारागार में महिला एवं पुरुष बन्दियों को निरोगी रहने के दृष्टिकोण से 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया गया। जिसमें प्रशिक्षकों द्वारा प्राणायाम, मुद्राभ्यास, संधियोग, योगासन एवं सूर्य नमस्कार की सभी क्रियाएं व आसन सिखाये गए क्योंकि योग शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उन्नति तथा सकारात्मक ऊर्जा व शांति के लिए अति आवश्यक है। हम सभी इसे अपने जीवन में समाहित करें ऐसी सभी से अपेक्षा है।

कार्यक्रम के पश्चात एक पेड़ माँ के नाम अंतर्गत पंचवटी के वृक्षों का रोपण कारागार परिषर में किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं संयोजन डिप्टी जेलर श्री प्रमोद कन्नौजिया ने किया।

डीआरआई ने स्वावलंबन केंद्रों सहित मझगवां में मनाया वीरांगना रानी दुर्गावती का 462वां बलिदान दिवस

सेनापति आधार सिंह एवं सखी चेरी बाई की प्रतिमा का हुआ अनावरण

संभागायुक्त जामोद ने वनवासी बालिकाओं को रानी दुर्गावती के जीवन से प्रेरणा लेने की कही बात

मझगवां / वीरांगना रानी दुर्गावती के 462वें बलिदान दिवस पर उनकी राष्ट्रभक्ति और उनके कृतित्व को दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा अपने सभी स्वावलंबन केंद्रों पर पूरी श्रद्धा के साथ याद किया गया। रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस पर चित्रकूट एवं मझगवॉ जनपद के सभी स्वावलंबन केन्द्रों पर विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। बड़ा आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र एवं कृष्णादेवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय मझगवां के महर्षि वाल्मीकि परिसर में किया गया।

इस दौरान वीरांगना रानी दुर्गावती के सेनापति आधार सिंह एवं सखी चेरी बाई जी की प्रतिमा अनावरण के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री चूड़ामणि सिंह एवं मुख्य अतिथि के रूप में संभागायुक्त रीवा श्री बी एस जामोद, विशिष्ट अतिथि के रूप में कलेक्टर सतना डॉ. सतीश कुमार एस, श्री श्याम सिंह कुमरे पूर्व आई ए एस, श्री किशोरी लाल जी, वनवासी कल्याण आश्रम महाकौशल प्रांत संगठन मंत्री, जिला संघचालक श्री रामबेटा कुशवाह, श्री रामराज सिंह सेवानिवृत प्राचार्य,

बिरसा मुंडा समिति बांका की अध्यक्ष श्रीमति सोना बाई सिंह, दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री अभय महाजन, कोषाध्यक्ष श्री बसंत पंडित, महाप्रबंधक श्री अमिताभ वशिष्ठ की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा वीरांगना रानी दुर्गावती जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि की गई एवं उनके बलिदान दिवस पर उनकी राष्ट्रभक्ति एवं उनके कृतित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में वीरांगना रानी दुर्गावती जी के सेनापति आधार सिंह और उनकी सखी चेरी बाई की प्रतिमा अनावरण किया गया उसके बाद रानी दुर्गावती जी के शौर्य आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में संभागायुक्त श्री बी एस जामोद ने रानी दुर्गावती जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उत्कृष्ट युद्ध कौशल में परायण वीरांगना दुर्गावती जी का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायक है।

कलेक्टर सतना डॉ. सतीश कुमार ने कहा कि वीरांगनाओं एवं वीरों की यह धरा सदैव ही गौरवशाली रही है उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व ही समाज की सबसे बड़ी पूंजी है। कार्यक्रम के अंत में संस्थान के कोषाध्यक्ष श्री वसंत पंडित ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि हम अपनी भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन करके ही दुर्गावती जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। इस अवसर पर लक्ष्मीकांत द्विवेदी, श्री संजय सिंह, गंगाराम यादव एवं कृषि विज्ञान केंद्र मझगवां के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. नवीन कुमार शर्मा सहित मझगवां क्षेत्र के गणमान्य जन उपस्थित रहे।

दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी का 6 जून 2025 को दिल्ली प्रवास

दीनदयाल शोध संस्थान के संगठन सचिव श्री अभय महाजन जी ने 8 जून 2025 को कोलकाता के "श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय" द्वारा स्थानीय "भारतीय भाषा परिषद सभागार" में आयोजित आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला के बीसवें आयोजन के अंतर्गत "बदलते राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पंच परिवर्तन की प्रासंगिकता" विषय पर बतौर प्रधान वक्ता वक्तव्य रखा।

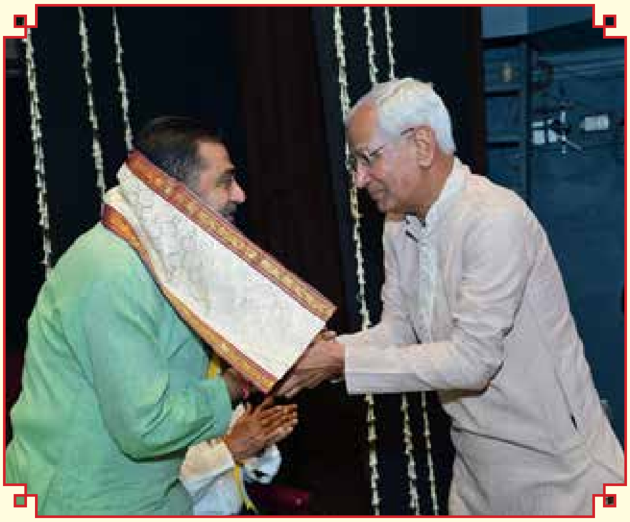

आरएनआई नं. दिल्ली-एन/2002/7201

गुरुकुल संकुल

दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट सतना (मध्य प्रदेश)

(ISO 9001:2008)

बालकों के लिए शैक्षणिक व्यवस्था युक्त आवासीय परिसर
शिक्षित वानप्रस्थी दंपतियों की आवश्यकता है।

जिनकी अहर्ताएं निम्नलिखित हैं :-

❖ दंपति को शिक्षित, ऊर्जावान, संवेदनशील एवं सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित होना चाहिए।

❖ दंपति की आयु लगभग 60 वर्ष की होनी चाहिए और शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ एवं पारिवारिक दायित्व से मुक्त हो।

❖ कक्षा 6 से 12 तक को कम-से-कम एक विषय में शिक्षण की योग्यता रखते हों। शिक्षकों को इस हेतु वरीयता दी जाएगी।

❖ प्रत्येक दंपति की भोजन एवं आवासीय व्यवस्था संस्थान निःशुल्क करेगा, इसके अतिरिक्त संस्थान के नियमों के अंतर्गत मानदेय भी दिया जाएगा।

❖ शैक्षणिक योग्यता की छाया प्रतियों के साथ आवेदन पत्र सादे पृष्ठ पर निम्नलिखित पते पर भेजें।

—: प्रभारी : —

गुरुकुल संकुल, दीनदयाल शोध संस्थान

चित्रकूट, जिला सतना (म.प्र.) दूरभाष : 07670-265353, 265528

ईमेल : drichitrakoot@chitrakoot.org